हिंदी
विवेक
WE WORK FOR A BETTER WORLD
Issue : 10 - 16 May 2026

लहरों पर तैरता
मौत का मंजर

50+ YEARS OF MOMENTUM
अर्थ
सहकारेण
कल्याणम्
दि कल्याण जनता सहकारी बँक लि.
मल्टी-स्टेट शेड्युल्ड बँक
सोने तारण कर्ज
जलद कर्ज
कमी प्रक्रिया शुल्क
व्याजदर
९.५०%* वार्षिक
* अटी व शर्ती लागू
TOLL FREE: 1800 233 1919
kalyanjanata.in
KJSBank

अनुक्रमणिका

लहरों से उठती चीखें	दीपक द्विवेदी	04
प्रश्नों के घेरे में बरगी डैम हादसा	प्रमोद जोशी	06
साहसिक एवं रोमांचक खेलों के जोखिम	राजीव रोहित	08
बंग प्रदेश की राजनीति का उदय	विप्लव विकास	11
थलपति की राजनैतिक अग्नि परीक्षा	रामेंद्र सिन्हा	13
राष्ट्रवाद की जीत	आशीष कुमार 'अंशु'	16
पुस्तक का विमोचन समारोह सम्पन्न	हिंदी विवेक	18
पहली डिजिटल जनगणना की शुरुआत	स्निग्धा अवतंस	19
हेलीकॉप्टर से 'साल्वो' का परीक्षण	सूर्यकांत आयरे	21
सोमनाथ में ज्योतिर्लिंग स्थापना	सोनाली जाधव	22
हिंदी साहित्य के युग प्रवर्तक	मुकेश गुप्ता	24
झालमुड़ी एक्सप्रेस	डॉ. मुकेश असीमित	25
अजब गजब	संकलन	26
समाचार		29

UPI पेमेंट गेटवे के लिए QR कोड स्कैन करें और मैसेज बॉक्स में अपना नाम, पता व सम्पर्क नम्बर दर्ज करें।

पंजीयन शुल्क

वार्षिक मूल्य : 500 रुपये, त्रैवार्षिक मूल्य : 1200 रुपये
पंचवार्षिक मूल्य : 1800 रुपये, आजीवन मूल्य : 25,000 रुपये

कार्यालय : प्लॉट नम्बर 7, आरएससी रोड नम्बर-10, सेक्टर-2, श्रीकृष्ण बिल्डिंग के पीछे, हनुमान मंदिर बस स्टॉप के समीप, चारकोप, कांदिवली (पश्चिम), मुंबई- 400067 फोन नं. : 022-28675299, 022-28678933

लहरों से उठती चीखें

दुर्घटना

दीपक द्विवेदी

जबलपुर में बरगी डैम में चलने वाली क्रूज पर बैठकर पर्यटक नर्मदा नदी और वहां के मनोरम सौंदर्य का आनंद ले रहे थे। अचानक मौसम का बदलाव व तेज हवा से क्रूज का संतुलन बिगड़ गया, जिससे डैम की लहरों पर चीख-पुकार मच गई। इस दौरान कई पर्यटक लहरों में समा गए जबकि कई पर्यटकों को बचा लिया गया।

नर्मदा की शांत जल राशि पर डूबते सूरज की लालिमा फैली हुई थी, बरगी बांध में पर्यटक अपने परिवारों के साथ क्रूज का आनंद ले रहे थे। बच्चे खुश थे, लोग फोटो खींच रहे थे। किसी को अनुमान नहीं था, कुछ ही मिनट में यह मनोरम दृश्य अफरा-तफरी और शोक में बदल जाएगा। 30 अप्रैल 2026 की शाम लगभग 5:15 से 6.15 के बीच मध्य प्रदेश पर्यटन विभाग द्वारा संचालित नर्मदा क्वीन नामक क्रूज तेज हवा, तूफान का सामना नहीं कर पाया और हवा की गति 60-70 किलोमीटर प्रति घंटे तक पहुंच गई, जिसके कारण बरगी बांध के शांत बैक वाटर में ऊंची लहरें उठने लगीं, जिससे क्रूज का संतुलन बिगड़ गया और क्रूज बुरी तरह हिचकोले खाते हुए अथाह जलराशि में समा गया।

प्रत्यक्षदर्शियों मीडिया रिपार्टो के अनुसार क्रूज पर 40 से 43 लोग सवार थे, जबकि टिकिट केवल 29 लोगों का ही कटा था। शुरुआती घंटों में 4 मौतों की पुष्टि हुई, बाद में 13 लोगों के मरने की बात सामने आई। 28 लोगों को एसडीआरएफ, एनडीआरएफ, स्थानीय गोताखोरों और ग्रामीण युवकों की सहायता से बचाया गया। हादसे की सबसे मार्मिक दृश्य 39 वर्षीय एक मां मरीना ने अपने 4 वर्षीय बेटे त्रिशान को अंतिम क्षण तक सीने से लगाए रखने वाली थी। बताया जाता है कि हादसे में डूबा यह क्रूज लगभग 19 वर्षों से सेवा में था। इसे आधुनिक कैटामारन हॉल तकनीक से बनाया गया था जो फाइबर रीइंफोर्स्ड प्लास्टिक (FRP) से निर्मित होने के कारण इसे आधुनिक और सुरक्षित क्रूजों में गिना जाता था। जुलाई 2024 में इसका व्यापक मेंटेनेंस भी किया गया था। तकनीकी विशेषज्ञों के अनुसार सबसे बड़ा संकट उस समय पैदा हुआ जब क्रूज तेज हवाओं के कारण ब्रॉडसाइड पोजिशन में आ गया। सामान्य स्थिति में नाव का अगला हिस्सा लहरों की दिशा में होना चाहिए, ताकि वह दबाव को काट सके, लेकिन यदि नाव हवा के दबाव में घूमकर लहरों के समानांतर हो जाए, तो लहरें उसे आसानी से पलट सकती हैं। प्रत्यक्षदर्शियों का कहना है कि तेज हवा के बीच क्रूज का संतुलन बिगड़ने लगा और भयभीत यात्री एक ओर झुक गए, जिससे गुरुत्व केंद्र असंतुलित हो गया। प्रत्यक्षदर्शियों और कुछ जीवित बचे यात्रियों ने दावा किया कि क्रूज के दो इंजनों में से एक पहले से ठीक से काम नहीं कर

रहा था। तेज लहरों के समय इंजन की शक्ति कम पड़ने से क्रूज अनियंत्रित हो गया था। हालांकि इस पर आधिकारिक पुष्टि जांच के बाद ही सम्भव हो पाएगी। दूसरी घटना के बाद सामने आए वीडियो से स्पष्ट हुआ है कि यात्रियों को यात्रा शुरू होने से पहले लाइव जैकेट नहीं दी गई थी, लाइव जैकेट संकट शुरू होने के बाद जल्दबाजी में बांटी गई। मौसम विभाग द्वारा खराब मौसम का अलर्ट जारी किए जाने के बाद भी क्रूज को समुद्र में उतारा गया।

मुख्य मंत्री मोहन यादव ने उच्च स्तरीय जांच के आदेश दिए, बाद में न्यायालय ने भी स्वत: संज्ञान लेते हुए पुलिस को एफआईआर दर्ज करने के निर्देश दिए। न्यायालय ने चालक दल की भूमिका और यात्रियों को बचाने में कथित विफलता को गम्भीर लापरवाही माना और पुलिस विभाग को दो दिन के भीतर न्यायालय में रिपोर्ट प्रस्तुत करने का आदेश दिया गया। इसके बाद विवाद तब खड़ा हुआ, जब जांच पूरी होने से पहले डूबे हुए क्रूज को काटकर टुकड़ों में अलग-अलग कर दिया गया। मृतक के परिजनों और समाजसेवी संगठनों ने इसे साक्ष्य नष्ट करने जैसा कदम बताया। विभिन्न विशेषज्ञों की राय के अनुसार यह हादसा केवल प्राकृतिक नहीं था, लेकिन सुरक्षा नियमों की अनदेखी, मौसम चेतावनी की उपेक्षा, तकनीकी कमियों की आशंका और आपातकालीन तैयारी की कमी ने हादसे को भयावह बना दिया।

एनजीटी की निर्देशों के अंतर्गत जलाशय में फोर-स्ट्रोक इंजन वाले जलयान होने चाहिए, लेकिन हादसे वाले क्रूज में कथित रूप से टू-स्ट्रोक इंजन लगा था। बरगी क्रूज हादसा कोई पहली घटना नहीं थी। अप्रैल 2026 में ही मथुरा वृंदावन में नाव हादसा हुआ, जिसमें कई लोगों की मौत हो गई थी, जांच में सामने आया कि नाव क्षमता से अधिक यात्रियों को लेकर चल रही थी और कई लोगों ने लाइफ जैकेट नहीं पहन रखी थी। इसी तरह गुजरात में 2024 में बड़ोदरा की हरनी झील में हादसा हुआ था। जिसमें जांच में यह पाया गया कि नाव में क्षमता से अधिक लोग बैठे थे और बच्चों को लाइफ जैकेट तक नहीं दी गई थी। 2023 में केरल में तनूर बोट हादसा हुआ जहां 20 से अधिक लोगों की मौत हो गई थी। जांच में पाया गया कि नाव के पास फिटनेस सर्टिफिकेट भी नहीं था। 2019 में गोदावरी नदी नाव हादसा हुआ, जहां 50 से अधिक लोगों की जानें चली गई थीं। बाढ़ और खराब मौसम की चेतावनी के बाद भी नाव का संचालन हो रहा था। इस तरह की अनेक घटनाएं देश में होती रही हैं, लेकिन इससे हम क्या सबक सीख सकते हैं, यह हमारे लिए बहुत महत्वपूर्ण है।

***

स्वयं के लिए और अपने परिजनों के लिए ग्रंथ का पंजीयन करें

इस ग्रंथ में आप पढ़ेंगे

- संघ में हो रहे अनगिनत सेवा कार्यों का परिणाम क्या है?
- डॉ. हेडगेवार जी से लेकर डॉ. मोहन भागवत जी तक के सभी सरसंघचालकों का दिशादर्शन...
- राजनीति को केंद्र में न रखकर राष्ट्रीयत्व को क्यों केंद्र में रखा?
- भारत के सम्मुख चुनौतियां और संघ कार्य का प्रभाव
- संघ विचारधारा और परिवर्तन

जैसे विविध मौलिक विषय

ग्रंथ का मूल्य ₹700/-

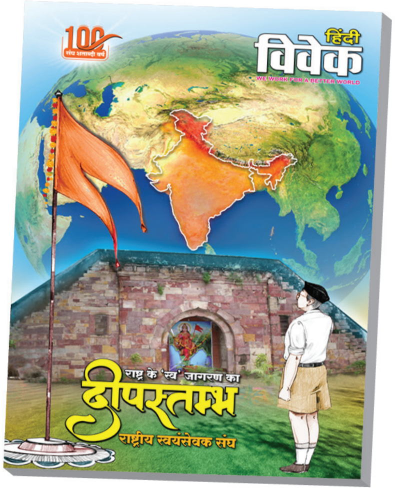

ईमेल – hindivivekvargani@gmail.com

Draft or Cheque should be drawn in the name of HINDUSTHAN PRAKASHAN SANSTHA HINDI VIVEK

Bank Details : State Bank of India, **Branch -** Charkop, A/C No. : 00000043884034193, IFSC Code : SBIN0011694

ग्रंथ पंजीकरण हेतु पत्रिका के स्थानीय प्रतिनिधि अथवा कांदिवली कार्यालय में सम्पर्क करें।

सम्पर्क प्रशांत : 9594961855, संदीप : 9082898483
भोला : 9702203252, कार्यालय : 9594991884

UPI पेमेंट गेटवे के लिए QR कोड स्कैन करे और मैसेज बॉक्स मे अपना नाम, पता व सम्पर्क नंबर दर्ज करें।

प्रश्नों के घेरे में
बरगी डैम हादसा

मध्य प्रदेश के जबलपुर स्थित बरगी डैम में 30 अप्रैल को हुए दर्दनाक क्रूज हादसे में 13 लोगों की मौत प्रश्नों के घेरे में है। मृतकों में महिलाएं और बच्चे भी शामिल थे। इस दुर्घटना ने देश की बढ़ती पर्यटन-संस्कृति और जल-आधारित मनोरंजनों से जुड़े कई प्रश्न खड़े किए हैं।

जबलपुर में बरगी डैम हादसा अब प्रश्नों के घेरे में आ गया है। इस क्रूज में 47 पर्यटक सवार थे, जिनमें से 28 लोगों को बचा लिया गया था। इस मामले में न्यायपालिका ने कड़ा रुख अपनाया है और प्रथम श्रेणी न्यायिक मजिस्ट्रेट की न्यायालय ने इस पर स्वतः संज्ञान लिया है। न्यायालय ने बरगी थाना प्रभारी को दो कार्य-दिवस के भीतर क्रूज चालक और अन्य क्रू सदस्यों के विरुद्ध एफआईआर दर्ज कर जांच शुरू करने के निर्देश दिए हैं।

न्यायालय ने कहा, 'क्रूज चालक, जो पानी की हर लहर और क्रूज की गतिविधियों से परिचित था, वह लोगों को मरता हुआ छोड़कर खुद सुरक्षित निकल आया।' न्यायालय ने इसे केवल लापरवाही नहीं बल्कि अपराध माना है। विभाग ने नौका के चालक सहित 3 कर्मचारियों को बर्खास्त कर दिया है। प्रश्न है कि क्या केवल इस स्तर के कर्मचारी ही इस हादसे के लिए जिम्मेदार हैं? न्यायालय ने उन लोगों की सराहना भी की है, जिन्होंने अपनी जान की परवाह किए बिना बचाव कार्य में हिस्सा लिया।

प्रमोद जोशी

यह हादसा शाम के 5 बजे के आसपास किनारे से लगभग 300 मीटर दूर हुआ था और उस समय हवा की गति करीब 74 किमी प्रति घंटा थी। यह क्रूज मध्य प्रदेश के पर्यटन विभाग का था। हादसे के कुछ घंटे बाद 4 शव बरामद किए। फिर 1 मई को 5 शव, 2 मई को 2 और 3 मई को 2 शव बरामद किए गए। मृतकों में एक पुरुष, 4 बच्चे और 8 महिलाएं शामिल हैं।

1 मई को दिल दहला देने वाली एक तस्वीर सामने आई। बचाव दल को एक मां और उसके 4 साल के बेटे का शव मिला, जो एक-दूसरे से चिपके थे। ये शव मरीना मैसी और उनके 4 साल के बेटे त्रिशान की थी। मरीना मैसी (39 वर्ष) दिल्ली की रहने वाली थीं। हादसे के दौरान उन्होंने अपने 4 वर्षीय बेटे त्रिशान को बचाने की आखिरी दम तक प्रयास किया था और उसे अपनी बांहों में जकड़ रखा था। कदाचित् वे उसे बचाना चाहती थी, उन्हें इसका विश्वास था।

शुरुआती आकलन में खराब मौसम को हादसे

का प्रमुख कारण माना जा रहा है। प्रश्न यह उठता है कि मौसम विभाग के अलर्ट के बाद भी क्रूज को डैम में क्यों उतारा गया? सुरक्षा जैकेटों को पर्यटकों को क्यों नहीं पहनाया गया? क्या क्रूज की मशीनरी तकनीकी दृष्टि से ठीक थी? क्या उसमें क्षमता से अधिक यात्री सवार थे? यह केवल प्राकृतिक हादसा था या फिर लापरवाही का परिणाम? एक प्रश्न यह भी है कि क्या सामान्य नागरिकों को अपनी सुरक्षा से जुड़ी बातों का बोध है भी या नहीं? यात्रा शुरू करने के पहले यात्रियों को जानकारी देने की कोई व्यवस्था है भी या नहीं?

राज्य सरकार ने मामले की जांच के लिए अतिरिक्त मुख्य सचिव (गृह) की अध्यक्षता में 4 सदस्यीय कमेटी गठित की। कमेटी में एडी होमगार्ड व सिविल डिफेंस, जबलपुर सम्भाग आयुक्त और पर्यटन विभाग के सचिव को सदस्य बनाया गया। यह कमेटी 15 दिन में सरकार को रिपोर्ट सौंपेगी। हमें उसकी जांच रिपोर्ट की प्रतीक्षा भी करनी होगी। जांच के बाद जो भी बातें सामने आएंगी, पर उसके पहले ही कुछ गम्भीर प्रश्न पूछे जा रहे हैं। इनमें पहला है कि जांच ठीक से शुरू होने से पहले ही हादसे की शिकार नाव को क्यों काटा गया? पर्यटकों को लेकर चल रही क्रूज बोट कथित तौर पर बिना बीमा के कैसे संचालित हो रही थी? और बिना पर्यावरणीय मंजूरी के यह संचालन कैसे जारी था? ये साधारण प्रश्न नहीं हैं। इन्हें जोड़कर देखें, तो कुल मिलाकर एक बड़ा प्रश्न खड़ा होता है कि क्या क्रूज त्रासदी केवल एक हादसा थी या एक बेहद लापरवाह सिस्टम का परिणाम?

सबसे ज्यादा प्रश्न पर्यटन विभाग की घोषणाओं, दावों और सिस्टम की कार्यप्रणाली से जुड़े हैं। मोटे तौर पर लग रहा है कि यह केवल अचानक आए तूफान और नाव के पलटने की कहानी नहीं है। यह हादसा कुछ नाकामियों की देन लग रहा है। इन बातों का सच सामने आना बाकी है, पर इसके कारण मध्य प्रदेश के पर्यटन की साख घटने का अंदेशा अवश्य है।

जिस नाव को जांच का सबसे अहम साक्ष्य मानकर सुरक्षित रखा जाना चाहिए था, उसे आधिकारिक जांच के पहले ही पूरी तरह तोड़ दिया गया है। हादसे में बचे लोगों का कहना है कि इससे नाव की डिजाइन, संरचना, सुरक्षा व्यवस्था और सम्भावित मेंटीनेंस कमियों से जुड़े अहम सुराग नष्ट हो गए होंगे। हालांकि अधिकारियों का कहना है कि नाव को काटना इसलिए आवश्यक था क्योंकि कुछ लोगों और शवों को निकालने के लिए ऐसा करना आवश्यक हो गया था।

एक मीडिया रिपोर्ट के अनुसार हादसे में अपने परिवार के 9 सदस्यों के साथ जीवित बचे एक व्यक्ति ने क्रूज को काटे जाने पर कड़ी आपत्ति जताई है। उनका कहना है कि जब नाव को डैम से बाहर निकाला गया था, तब वह सही हालत में थी और उसका विस्तृत तकनीकी परीक्षण होना चाहिए था। उन्होंने कहा, ‘जब जांच हो रही है, तब ऐसा कुछ भी नहीं किया जाना चाहिए था। अब जब साक्ष्य नष्ट हो गए हैं, तो फिर अब आगे महत्वपूर्ण बातें सामने आने की सम्भावना कम है।’ मीडिया ने कुछ सूत्रों के आधार पर जानकारी दी है कि यह नौका बिना इंश्योरेंस के चल रही थी और इसके दो इंजनों में से एक पहले से ही खराब था। जब इस बारे में सरकारी अधिकारियों से पूछा गया तो उन्होंने कहा कि हमें इंजन की खराबी की कोई शिकायत नहीं मिली थी। हादसे के वक्त क्रूज का संचालन कर रहे पायलट ने एक स्थानीय समाचारपत्र को दिए साक्षात्कार में जो बातें बताई हैं, वे चिंताजनक है।

आश्चर्य की बात यह है कि जिस बोट के साथ यह हादसा हुआ, उसे साल 2024 में ही मीडियम रिफिट यानी मरम्मत किया गया था। इस मरम्मत कार्य में लगभग 38 लाख रुपए खर्च किए गए थे और दावा किया गया था कि अब अगले 10 सालों तक यह क्रूज बिना किसी तकनीकी खराबी के चलेगा, लेकिन हादसे के समय इंजन का फेल होना यह प्रश्न खड़ा करता है कि क्या मरम्मत के नाम पर खर्च किए गए 38 लाख रुपयों का क्या हुआ?

***

राजीव रोहित

रोमांच से भरे समुद्री खेल जहां एक ओर साहसिक तो हैं, लेकिन दूसरी ओर वे संकटों से भी घिरे हुए होते हैं। जिन लोगों को ये समुद्री खेल पसंद हैं, उन्हें सभी नियमों व सुरक्षा के सभी मानकों को ध्यान में रखते हुए साहसिक व रोमांचक खेलों का आनंद लेना चाहिए।

समय के अनुसार दुनिया के हर देश में नदी, सागरों और महासागरों से सम्बंधित विविध प्रकार के खेलों का अविष्कार हुआ। समुद्री रोमांचक खेलों का अविष्कार भी प्रत्येक देश ने अपनी भौगोलिक और प्राकृतिक अवस्थाओं के आधार पर किया। ये रोमांचक खेल मनुष्य को एक अलग ही विस्मयकारी दुनिया में ले जाते हैं, जब हमें लगता है कि हमने एक अलग दुनिया में प्रवेश कर लिया है। जहां अनेकानेक जोखिम तो हैं, पर इसके साथ अविस्मरणीय आनंद भी प्राप्त होता है। समुद्री खेलों के सम्बंध में बात करें तो यह कहा जाता है कि धरती पर समुद्र, रेगिस्तान, बिहड़ जंगल और हिमालय सबसे अद्भुत, विचित्र और रहस्यों से भरा है। इनमें भी समुद्र की बात की जाए तो समुद्री सुरंग, समुद्री गुफा, समुद्री टापू और समुद्र तटों के तो कहने ही क्या। ऐसा प्रतीत होता है मानों जीवन है तो यहीं पर और कहीं पर भी नहीं।

साहसिक एवं रोमांचक खेलों की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि ये सारे पर्यटन से जुड़े होते हैं। हर अनुभव स्तर के रोमांच प्रेमियों के लिए अनेक विकल्प उपस्थित हैं।

साहसिक पर्यटन सहित पर्यटन के विकास और संवर्धन तथा साहसिक पर्यटन स्थलों पर सुरक्षा और सुविधा बढ़ाना मुख्य रूप से राज्य सरकारों और केंद्र शासित प्रदेशों की जिम्मेदारी है। अत: भारत सरकार ने हाल ही में सदन को बताया कि देश में साहसिक पर्यटन क्षेत्र में सुरक्षा सुनिश्चित करने के उद्देश्य से 'साहसिक सुरक्षा दिशा निर्देश' तैयार कर इन्हें सभी राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों को भेजा गया है ताकि वे सुरक्षा प्रोटोकॉल को अपनाएं और उन्हें आवश्यकता के अनुसार अद्यतन करें।

उन्होंने बताया कि देश में साहसिक पर्यटन क्षेत्र में सुरक्षा सुनिश्चित करने के उद्देश्य से 'एडवेंचर टूर ऑपरेटर्स एसोसिएशन ऑफ इंडिया' के सहयोग से 'साहसिक सुरक्षा दिशा निर्देश' तैयार किए गए हैं। पर्यटन मंत्रालय ने अतुल्य भारत डिजिटल प्लेटफॉर्म (इंक्रेडिबल इंडिया डिजिटल प्लेटफॉर्म) का नया संस्करण लॉन्च किया है, जो देश की यात्रा में रुचि रखने वाले यात्रियों और हितधारकों के लिए एक व्यापक संसाधन के रूप में उपलब्ध है। उन्होंने यह भी जानकारी दी कि आईआईडीपी एक एआई संचालित टूल का उपयोग करता है जो वास्तविक समय के मौसम अपडेट, शहर की खोज और आवश्यक यात्रा सेवाएं प्रदान करके खिलाड़ियों द्वारा ली गई चुनौतियों का सामना करने में सक्षम बनाता है।

साहसिक एवं रोमांचक खेलों के जोखिम

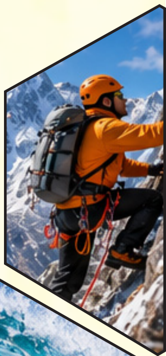

यह सर्वविदित है कि भारत भर में साहसिक खेल उत्सवों और आयोजनों की लहर दौड़ गई है, जिससे रोमांचकारी गतिविधियों के प्रति राष्ट्र का जुनून और बढ़ गया है। ट्रेकिंग, पर्वतारोहण, साइकिलिंग, दौड़ना, रिवर राफ्टिंग और समुद्री खेलों में दिनोंदिन बढ़ती भागीदारी आदि इसके उदाहरण हैं। ये सभी खेल रोमांच पसंद करनेवाले किसी भी आयु के स्त्री और पुरुष के लिए हमेशा एक चुनौती होती जिसे वो स्वीकार करते हैं। समुद्री में स्कूबा डाइविंग सबसे लोकप्रिय

है। स्कूबा डाइविंग एक ट्यूब की बदौलत पानी के नीचे सांस लेकर किया जाता है। जिस ट्यूब में डाईवर (गोताखोर) गोता लगाएंगे, ट्यूब उतनी ही गहराई में उतरेगी। यह एक निश्चित अवधि के लिए आपकी ऑक्सीजन की आवश्यकताओं को पूरा करता है। यदि कोई पानी के भीतर निर्धारित समय से अधिक देर तक रहते हैं, तो उन्हें वापस आने में समस्या हो सकती है। इसलिए सुरक्षा की दृष्टि से गोताखोरी सीखने के लिए पहले एक पेशेवर लाइसेंस प्राप्त डाइविंग प्रशिक्षक से प्रशिक्षण प्राप्त करना चाहिए। अभी हाल ही में हिमाचल प्रदेश के उच्च न्यायालय ने सम्बंधित राज्य सरकार को आवश्यक निर्देश जारी किए कि विशेषतया पैराग्लाईडिंग के लिए अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सुरक्षा पैराशूट, हेलमेट, दोतरफा रेडियो संचार उपकरण और ऑपरेटरों को हेलिकॉप्टर के उपयोग के लिए बीमा निकासी का प्रबंध किया जाए। ऑपरेटर अपने साथ दो अच्छी तरह से सुसज्जित आवश्यक सामग्री से युक्त प्राथमिक चिकित्सा किट, पट्टियां, पैड, धुंध रोलर पट्टियां, दबाव पट्टियां, कैंची आदि रखे। ऑपरेटर के पास प्रतिभागियों के मार्गदर्शन के लिए दो गाइड और एयर राफ्ट का संचालन करने वाले व्यक्ति नियमों के अंतर्गत आवश्यक योग्यता रखते हों। ऑपरेटर के पास 18 वर्ष से अधिक आयु वाले गाइड हों और सभी गाइड अच्छी तरह से हवाई खेल और बचाव तकनीकों में प्रशिक्षित हों। ऑपरेटर के पास चिकित्सा सुविधाएं और ऑपरेशन के दौरान सुरक्षा उपायों के रूप में आवश्यक उपकरण हो। एयरो स्पोर्ट ऑपरेशंस सूर्यास्त से 1 घंटे पहले या शाम 6 बजे से पूर्व समाप्त कर लिया जाए। उच्च न्यायालय ने कहा कि रिवर राफ्टिंग के सम्बंध में समिति निरीक्षण करें और सत्यापित करें कि क्या ऑपरेटर के पास आवश्यक उपकरण, चिकित्सा सुविधाएं और संचालन के दौरान सुरक्षा उपाय अन्य सुविधाएं भी मौजूद हैं। अन्य राज्यों के लिए ये दिशा-निर्देश आंखें खोलने वाले हैं। उन्हें भी प्रशासनिक स्तर पर इन दिशा-निर्देशों का व्यापक प्रसार जनमानस के बीच करना चाहिए। इससे आम नागरिकों को भी अपने उत्तरदायित्वों का निर्वाह करने में आसानी होगी। भारत भर में साहसिक खेल उत्सवों और समारोहों की एक लहर दौड़ गई है। इन समारोहों ने रोमांचकारी गतिविधियों के प्रति राष्ट्र के जुनून को और भी बढ़ा दिया है। ये आयोजन जीवंत केंद्रों के रूप में कार्य करते हैं, जो विभिन्न क्षेत्रों के प्रतिभागियों को अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन करने और साथी उत्साही लोगों के साथ सम्बंध स्थापित करने के लिए आकर्षित करते हैं। जैसे-जैसे यह भावना विकसित हो रही है, आम जन इन साहसिक गतिविधियों में अधिक से अधिक संलग्न होने का प्रयास करते हैं। ***

राष्ट्रीय भावनाओं को जाग्रत करनेवाली सामाजिक व पारिवारिक पत्रिका

हिंदी विवेक
We Work For Better World

Combo Offer

ग्रंथ प्रकाशन का उद्देश्य

- भारत की आत्मा ...सेवा। जो केवल सहायता या दान नहीं है।
- सेवा का सही अर्थ है कर्तव्य, संवेदना और सामाजिक उत्तरदायित्व का समन्वय।
- सेवा को भावनात्मक कार्य से आगे ले जाकर विचारशील, सामाजिक प्रक्रिया के रूप में प्रस्तुत करना।
- सेवा के पीछे की भारतीय दृष्टि, प्रेरणा और दर्शन को उजागर करना।
- इस विचार को बल देना कि सेवा व्यक्ति को संस्कारित कर समाज को संगठित एवं सशक्त करने का प्रभावी माध्यम है।
- आदर्श सेवा कार्यों को संकलित कर समाज के प्रबुद्ध पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत करना।

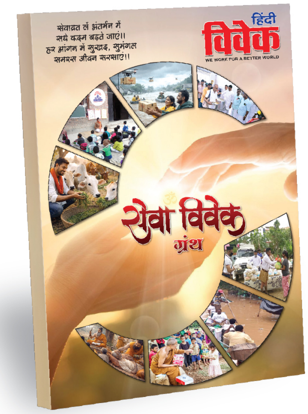

हिंदी विवेक की पंचवार्षिक सदस्यता

सेवा विवेक ग्रंथ

मूल्य ₹ 500 + मूल्य ₹ 1800 + मूल्य ₹ 700

कुल : ₹ 3000/-

आपको मिलेगा मात्र ₹ 2500 में

ऑनलाइन पेमेंट करने के बाद कृपया 9594991884 पर कॉल करके सूचित करें या व्हाट्सअप करें।

Draft or Cheque should be drawn in the name of : HINDUSTHAN PRAKASHAN SANSTHA HINDI VIVEK

UPI पेमेंट गेटवे के लिए QR कोड स्कैन करें और मैसेज बॉक्स में अपना नाम, पता व सम्पर्क नंबर दर्ज करें।

Bank : State Bank of India
Branch : Charkop
A/C No. : 43884034193
IFSC : SBIN0011694

स्थानीय प्रतिनिधि से सम्पर्क करें या...
कार्यालय : सहारा नांगरे - 9594991884
Email : hindivivekvargani@gmail.com

राष्ट्रीय भावनाओं को जाग्रत करनेवाली
सामाजिक व पारिवारिक पत्रिका

हिंदी विवेक
We Work For Better World

पंजीयन करें

सेवा विवेक ग्रंथ

मौलिक एवं संग्रहणीय ग्रंथ, स्वयं एवं परिजनों के लिए पंजीयन करें

ग्रंथ प्रकाशन का उद्देश्य

भारत की आत्मा ...सेवा। जो केवल सहायता या दान नहीं है।

सेवा का सही अर्थ है कर्तव्य, संवेदना और सामाजिक उत्तरदायित्व का समन्वय।

सेवा को भावनात्मक कार्य से आगे ले जाकर विचारशील, सामाजिक प्रक्रिया के रूप में प्रस्तुत करना।

सेवा के पीछे की भारतीय दृष्टि, प्रेरणा और दर्शन को उजागर करना।

इस विचार को बल देना कि सेवा व्यक्ति को संस्कारित कर समाज को संगठित एवं सशक्त करने का प्रभावी माध्यम है।

आदर्श सेवा कार्यों को संकलित कर समाज के प्रबुद्ध पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत करना।

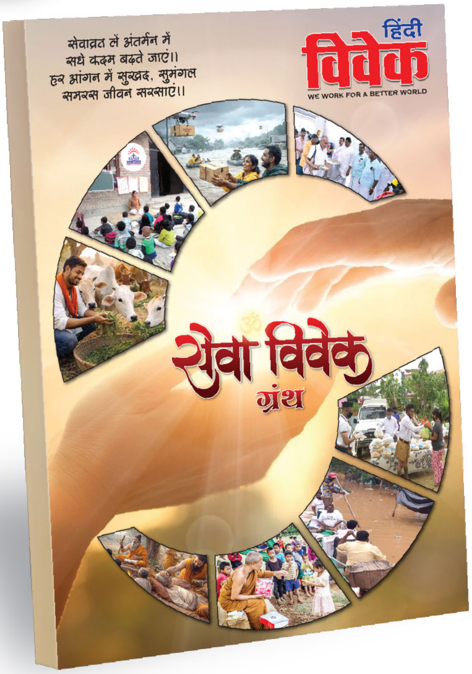

प्रकाशन पूर्व मूल्य
₹ 600/-

ग्रंथ का मूल्य
₹ 700/-

देश के गणमान्य विशेषज्ञों एवं लेखकों की कलम से समृद्ध विषय वस्तु से परिपूर्ण ग्रंथ

UPI पेमेंट गेटवे के लिए QR कोड स्कैन करे और मैसेज बॉक्स मे अपना नाम, पता व सम्पर्क नंबर दर्ज करें।

ऑनलाइन पेमेंट करने के बाद कृपया 9594991884 पर कॉल करके सूचित करें या व्हाट्सअप करें।

Draft or Cheque should be drawn in the name of : **HINDUSTHAN PRAKASHAN SANSTHA HINDI VIVEK**

Bank : State Bank of India
Branch : Charkop
A/C No. : 43884034193
IFSC : SBIN0011694

स्थानीय प्रतिनिधि से सम्पर्क करें
कार्यालय : सहारा नांगरे - 9594991884
Email : hindivivekvargani@gmail.com

पश्चिम बंग 2026 का चुनाव भारतीय लोकतंत्र के इतिहास में एक निर्णायक अध्याय के रूप में याद किया जाएगा। बंग प्रदेश अब पुराने राजनीतिक समीकरणों से आगे निकल चुका है। अब असली परीक्षा चुनाव जीतने की नहीं, शासन चलाने की होगी।

बंग प्रदेश की राजनीति का उदय

पोइला बैशाख 2026 पश्चिम बंग की राजनीति में केवल बंगाली नववर्ष का उत्सव नहीं रहा। इस बार यह राज्य की वैचारिक दिशा बदलने वाले राजनीतिक मोड़ के रूप में दर्ज हुआ। 'पालटानो दोरकार, चाई बीजेपी सरकार' का नारा चुनावी मंचों से निकलकर गांव, मोहल्लों और सोशल मीडिया तक फैल गया। 294 सदस्यीय विधानसभा में भारतीय जनता पार्टी की 207 सीटों की ऐतिहासिक जीत ने न केवल बंग प्रदेश बल्कि राष्ट्रीय राजनीति को भी नई बहस के केंद्र में ला खड़ा किया है। तीन दशकों तक वामपंथ और फिर तृणमूल कांग्रेस के प्रभुत्व वाले इस राज्य में पहली बार इतनी स्पष्ट वैचारिक ध्रुवता दिखाई दी।

इस परिणाम को भाजपा समर्थक हिंदू जागरण की जीत बता रहे हैं, जबकि विपक्ष इसे तीव्र ध्रुवीकरण और पहचान-आधारित राजनीति का परिणाम मान रहा है, लेकिन एक बात निर्विवाद है, 2026 का बंग प्रदेश चुनाव केवल सरकार बदलने का चुनाव नहीं था, यह बंग प्रदेश की राजनीतिक भाषा, प्रतीकों और सामाजिक गठबंधनों के पुनर्गठन का चुनाव बन गया।

चुनाव परिणामः किसके हिस्से क्या आया?

भाजपा ने 207 सीटों के साथ स्पष्ट बहुमत प्राप्त किया, जबकि तृणमूल कांग्रेस 80 सीटों पर सिमट गई। कांग्रेस को 2 और CPI(M) को केवल 1 सीट मिली। क्षेत्रीय और अल्पसंख्यक आधारित दलों का प्रभाव कुछ सीमित क्षेत्रों तक सिमटता दिखाई दिया। अभी दक्षिण 24 परगना में फलता का पुनर्मतदान बाकी है। सम्भवतः यहां भी भाजपा ही जीतेगी। इस बार का सबसे बड़ा राजनीतिक संदेश यह रहा कि बंग प्रदेश में पहली बार हिंदू मतों का व्यापक स्तर पर एकीकृत मतदान देखने को मिला। राजनीतिक विश्लेषकों के अनुसार भाजपा ने इस चुनाव में जातीय उप-विभाजनों से ऊपर उठकर सांस्कृतिक पहचान आधारित लामबंदी पर जोर दिया।

विप्लव विकास

भाजपा की जीत के पांच बड़े कारण बूथ से मोहल्ले तक संघ की सूक्ष्म रणनीति

इस चुनाव में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की भूमिका सबसे अधिक चर्चा में रही। बड़े रोड शो और विशाल सभाओं के साथ-साथ संघ और भाजपा ने पाड़ा बैठक मॉडल पर विशेष ध्यान दिया। छोटे समूहों में बैठकों के जरिए स्थानीय स्तर पर सांस्कृतिक पहचान, सुरक्षा और राजनीतिक प्रतिनिधित्व जैसे मुद्दों को उठाया गया। मतुआ, राजबंशी और आदिवासी समुदायों के बीच गहन सम्पर्क अभियान ने भाजपा को नए सामाजिक आधार प्रदान किए।

अस्मिता बनाम तुष्टीकरण की बहस

दुर्गा पूजा विसर्जन विवाद, सरस्वती पूजा पर कथित प्रतिबंधों की घटनाएं, संदेशखाली और आरजी कर जैसे मामलों को भाजपा ने सांस्कृतिक असुरक्षा के रूप में प्रस्तुत किया।

भाजपा का केंद्रीय संदेश था- भय नहीं, भरोसा।

यही कारण रहा कि 'जय श्री राम' का नारा बंग प्रदेश में धार्मिक उद्घोष से आगे बढ़कर राजनीतिक

प्रतिरोध का प्रतीक बन गया।

70 बनाम 30 का नया चुनावी गणित

भाजपा ने इस बार अल्पसंख्यक वोटों में सेंध लगाने की बजाए बहुसंख्यक हिंदू मतों के व्यापक ध्रुवीकरण पर ध्यान केंद्रित किया। राजनीतिक आंकड़ों के अनुसार भाजपा का वोट शेयर लगभग 46% तक पहुंचा। विश्लेषकों का मानना है कि भाजपा को पहली बार ग्रामीण बंगाल, शहरी मध्यम वर्ग, अनुसूचित जाति समुदायों और पारम्परिक वाम समर्थकों का साझा समर्थन मिला।

सोनार बांग्ला और लोकल राष्ट्रवाद

भाजपा के घोषणापत्र में केवल हिंदुत्व ही नहीं बल्कि बंगाली गौरव की राजनीति भी दिखाई दी। धार्मिक पर्यटन, सीमावर्ती सुरक्षा, भ्रष्टाचार विरोधी अभियान और महिलाओं के लिए प्रत्यक्ष आर्थिक सहायता जैसी योजनाओं को प्रमुखता दी गई।

इस चुनाव में भाजपा ने यह संदेश देने का प्रयास किया कि वह केवल राष्ट्रीय पार्टी नहीं बल्कि बंगाल की नई क्षेत्रीय आकांक्षा का प्रतिनिधित्व भी कर सकती है।

सोशल मीडिया का लोक-विद्रोह मॉडल

2026 के चुनाव की सबसे बड़ी नई कहानी सोशल मीडिया का विकेंद्रीकृत प्रभाव रहा। इस बार केवल पार्टी आईटी सेल ही नहीं बल्कि सामान्य नागरिकों, स्थानीय यूट्यूबर्स और इंस्टाग्राम क्रिएटर्स ने भी चुनावी विमर्श को प्रभावित किया। सिंडिकेट राज, भ्रष्टाचार और हिंसा जैसे आरोपों को छोटे वीडियो और लोकल भाषाई कंटेंट के जरिए तेजी से फैलाया गया। इसे हम People-led Narrative Campaign कह सकते हैं, जहां पहली बार जनता स्वयं डिजिटल प्रचारक की भूमिका में दिखाई दी।

इस चुनाव की नई और अनदेखी कहानी: डिजिटल पड़ोस राजनीति

2026 के बंग प्रदेश चुनाव की एक दिलचस्प विशेषता रही डिजिटल पड़ोस राजनीति। पहले बंगाल की राजनीति चाय की दुकानों, क्लबों और मोहल्ला बैठकों तक सीमित रहती थी, लेकिन इस बार हर पाड़ा का अपना नेटवर्क, लोकल फेसबुक ग्रुप और माइक्रो-इंफ्लुएंसर मौजूद था।

कई जिलों में देखा गया कि स्थानीय मुद्दों, जैसे सड़क, राशन, सांस्कृतिक आयोजन या धार्मिक जुलूस को लेकर बनाए गए छोटे डिजिटल समूह बाद में राजनीतिक लामबंदी का आधार बन गए। यानी यह चुनाव केवल रैलियों और टीवी डिबेट से नहीं जीता गया, इसे मोबाइल स्क्रीन, लोकल रील्स और पड़ोस आधारित डिजिटल नेटवर्क ने भी आकार दिया। यह मॉडल भविष्य के भारतीय चुनावों में निर्णायक सिद्ध हो सकता है।

***

थलपति की राजनैतिक अग्नि परीक्षा

रामेंद्र सिन्हा

तमिलनाडु विधानसभा चुनाव परिणाम आने के बाद टीवीके ने अपने पहले ही चुनाव में ऐतिहासिक प्रदर्शन किया। अभिनेता से नेता बने थलपति विजय को राजनीति की पुरपेंच गलियों का अनुभव कदाचित् कम हो, पर यदि तमिलनाडु की सत्ता उनके हाथों में आती है तो उनके लिए यह अग्नि परीक्षा सिद्ध होगी।

2026 के तमिलनाडु विधानसभा चुनाव परिणामों ने राज्य की 60 साल पुरानी द्रविड़ राजनीति की जमीन हिला दी। अभिनेता से राजनेता बने थलपति विजय की पार्टी 'तमिलगा वेत्री कड़गम' (टीवीके) ने अपने पहले ही चुनाव में ऐतिहासिक प्रदर्शन करते हुए द्रविड़ मुन्नेत्र कड़गम (डीएमके) और अन्ना द्रविड़ मुन्नेत्र कड़गम (एआईडीएमके) के वर्चस्व को तोड़ तो दिया है, परंतु राज्य में अभी सत्ता का खेल जारी है। हाल-फिलहाल, सबसे बड़े दल के रूप में एक अल्पमत सरकार बनाना और चलाना विजय के लिए बड़ी चुनौती तो है।

थलपति विजय का वास्तविक नाम जोसेफ विजय चंद्रशेखर है। चेन्नई में जन्मे 52 वर्षीय विजय एक अभिनेता होने के साथ गायक, नर्तक और नेता भी हैं। पिता एस.ए. चंद्रशेखर तमिल सिनेमा के जाने-माने निर्देशक और मां शोभा पार्श्व गायिका हैं। विजय ने 2009 में अपना फैन क्लब 'विजय मक्कल अय्यकम' शुरू किया। इस संगठन ने 2011 के तमिलनाडु विधानसभा चुनावों में एआईडीएमके के नेतृत्व वाले गठबंधन का समर्थन किया। फरवरी 2019 में विजय ने केंद्र सरकार द्वारा पारित नागरिकता संशोधन अधिनियम 2019 के विरूद्ध अपने विचार प्रकट करते हुए कहा कि इससे देश का सामाजिक-धार्मिक सद्भाव बिगड़ जाएगा। उनके फैन क्लब के सदस्यों ने 2022 के तमिलनाडु स्थानीय चुनावों में चुनाव लड़ा और 115 सीटों पर जीत प्राप्त की। विजय ने फरवरी 2024 में आधिकारिक तौर पर राजनीति में एंट्री की और तमिलगा वेत्री कड़गम पार्टी की घोषणा की। उन्होंने अपनी पार्टी का चुनाव चिह्न 'सीटी' रखा।

2026 के तमिलनाडु विधानसभा चुनाव में थलपति विजय की फिल्मों के संदेशों ने उनकी राजनीतिक जीत में एक बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

विजय ने अपनी हाल की फिल्मों जैसे 'सरकार' (मतदाता अधिकार), 'मर्सल' (स्वास्थ्य सेवा/कराधान) और 'कत्थी' (कृषक मुद्दे) के माध्यम से भ्रष्टाचार, शिक्षा और जन कल्याण जैसे मुद्दों पर मुखर होकर अपनी एक जन-नायक की छवि बनाई। इन संदेशों ने जनता के बीच उनकी राजनीतिक गम्भीरता को स्थापित किया। उन्होंने अपने फैन क्लबों को 'विजय मक्कल इयक्कम' नामक एक कल्याणकारी संगठन में बदला, जिसने वर्षों तक शिक्षा, चिकित्सा सहायता और आपदा राहत प्रदान करके एक मजबूत जमीनी नेटवर्क तैयार किया। यही नेटवर्क चुनाव में राजनीतिक कार्यकर्ताओं के रूप में काम आया। दूसरी ओर 5 साल के शासन के बाद डीएमके सरकार को भ्रष्टाचार के आरोपों, कानून-व्यवस्था की चिंताओं और विशेष रूप से महिलाओं के विरूद्ध बढ़ते अपराधों के कारण जनता की नाराजगी का सामना करना पड़ा। डीएमके की नैया डुबोने में पार्टी के हिंदू विरोधी रवैए ने भी अहम भूमिका निभाई।

यद्यपि विजय की पार्टी 118 के बहुमत के आंकड़े से 10 सीटें पीछे है, इस चुनाव का सबसे बड़ा व्यक्तिगत उलटफेर कोलाथुर निर्वाचन क्षेत्र में देखने को मिला, जहां निवर्तमान मुख्य मंत्री और डीएमके प्रमुख एम.के. स्टालिन को टीवीके के उम्मीदवार वी.एस. बाबू ने लगभग 8,795 वोटों से हरा दिया। स्टालिन 2011 से लगातार इस सीट से जीतते आ रहे थे। इस हार के साथ वह राज्य के इतिहास में चुनाव हारने वाले दूसरे पदस्थ मुख्य मंत्री बन गए। यही नहीं, स्टालिन कैबिनेट के 15 मंत्रियों को भी अपनी सीटों पर हार का सामना करना पड़ा। ऐसी स्थिति में तमिलनाडु कांग्रेस कमेटी ने डीएमके के साथ अपना पुराना गठबंधन तोड़कर टीवीके को कुछ शर्तों के साथ समर्थन देने का निर्णय किया। कांग्रेस ने टीवीके सरकार में औपचारिक भागीदारी के साथ यह शर्त भी रखी है कि विजय की पार्टी भविष्य में भाजपा या एआईडीएमके जैसे किसी भी एनडीए सहयोगी दल से समर्थन नहीं लेगी और न ही उन्हें गठबंधन में शामिल करेगी। दूसरी ओर डीएमके और एआईडीएमके के गठजोड़ से नई सरकार के गठन की अफवाहें भी जोर पकड़ रहीं, जब राज्यपाल ने कहा कि जो बहुमत का आंकड़ा प्रस्तुत करेगा, उसी को सरकार बनाने का न्योता मिलेगा।

टीवीके की गठबंधन सरकार बन गई तो थलपति विजय के सामने सबसे पहली चुनौती उसे स्थिरता देना होगा। कांग्रेस और अन्य छोटे दलों के समर्थन से एक अल्पमत सरकार चलाने में अस्थिरता का जोखिम तो बना रहेगा। विजय को सार्वजनिक दायित्व का कोई अनुभव भी नहीं है। तमिलनाडु जैसे औद्योगिक और आर्थिक रूप से जटिल राज्य की नौकरशाही को सम्भालना भी कुछ आसान नहीं होगा। विजय के घोषणापत्र में भ्रष्टाचार मुक्त शासन, महिलाओं के लिए विशेष योजनाएं, मुफ्त बिजली, मुफ्त गैस सिलेंडर, रोजगार और बेरोजगारी भत्ता तथा कर्ज माफी जैसे अनेक लोक-लुभावन वादे शामिल हैं। विशेषज्ञों का अनुमान है कि इन वादों को पूरा करने पर राज्य के खजाने पर लगभग 12 लाख करोड़ का वार्षिक बोझ पड़ सकता है, जो राज्य के वर्तमान बजट से कहीं अधिक है।

यही नहीं, टीवीके को डीएमके और एआईडीएमके जैसे दशकों पुराने अनुभवी राजनीतिक दलों की कड़ी चुनौती का सामना करना होगा। तमिलनाडु और केंद्र के बीच अधिकतर भाषाई और नीतिगत मुद्दों (जैसे नीट और शिक्षा) पर टकराव बना रहता है और यदि किसी उलटफेर से डीएमके-एआईडीएमके गठबंधन सरकार बनी, तब भी तमिलनाडु में राजनीतिक अस्थिरिता तो बनी रहेगी।

***

इलायाथलपति से थलपति तक की यात्रा

पिछले 3 दशकों से विजय तमिल सिनेमा में रजनीकांत, कमल हासन के बाद सबसे बड़े सुपरस्टार माने जाते हैं। बॉलीवुड में जैसे, अमिताभ बच्चन को 'बिग बी' के नाम से सम्बोधित किया जाता है, वैसे ही साउथ में भी बड़े-बड़े सुपरस्टार्स को अलग-अलग उपाधि देते हैं। जैसे, रजनीकांत को 'थलाइवा' यानी बॉस, कमल हासन को 'उलनायगन' यानी यूनिवर्सल हीरो। ऐसे ही विजय को थलपति की उपाधि दी गई है। 1994 में पिता एसए चंद्रशेखर की सुपरहिट फिल्म 'रसिगन'के हीरो विजय से 'इलायाथलपति' यानी 'छोटा कमांडर' की उपाधि मिली। 2017 में एटली की फिल्म 'मर्सल' में उनके नाम के आगे थलपति लगाया गया और वहीं से उन्हें थलपति विजय कहा जाने लगा। विजय यंग कमांडर से कमांडर बन गए। विजय ने 25 अगस्त 1999 को श्रीलंका में जन्मी एक ब्रिटिश तमिल संगीता सोरनालिंगम से शादी की। 2025 में संगीता ने तलाक के लिए अर्जी दी। उनके दो बच्चे हैं, एक बेटा (जेसन संजय) और एक बेटी (दिव्या साशा)। दोनों पारिवारिक विरासत को आगे बढ़ाने में लगे हैं।

TJSB SAHAKARI BANK LTD.
MULTI-STATE SCHEDULED BANK
Bharose ka Bank Bhavishya ka Bank
YOUR DREAM HOME, OUR COMMITMENT.
TJSB Housing Loan
up to ₹ 3 Cr.*
at Attractive Rate of Interest
T&C Apply*
www.tjsb.bank.in | 022-48897204

आशीष कुमार 'अंशु'

पांच राज्यों के विधानसभा चुनाव के परिणाम आ गए हैं। किसी के हाथों से सत्ता गई तो किसी की हाथों में सत्ता आई। कुल मिलाकर यही कह सकते हैं कि कहीं खुशी तो कहीं गम का वातावरण रहा ,लेकिन एक बात तो एकदम साफ है कि सभी राज्यों के मतदाताओं ने विकास, सुरक्षा व आधारभूत सुविधाएं का दृष्टिकोण रखते हुए अपने मताधिकार का प्रयोग किया।

राष्ट्रवाद की जीत

2026 के विधानसभा चुनावों ने सिद्ध कर दिया है कि भारतीय मतदाता अब विकास, सुरक्षा और सांस्कृतिक पहचान के मुद्दों पर स्पष्ट विकल्प चुन रहा है। वामपंथी ताकतों का समूल नाश और जिहादी ब्लैकमेल की राजनीति का अंत इन चुनावों की सबसे बड़ी उपलब्धि है।

असम: लगातार तीसरी बार भाजपा की सशक्त वापसी

126 सीटों वाली असम विधानसभा में भाजपा ने सहयोगी दलों के साथ मिलकर स्पष्ट बहुमत प्राप्त किया। हिमंत बिस्व सरमा के नेतृत्व वाली सरकार ने विकास कार्यों, कल्याणकारी योजनाओं और अवैध घुसपैठ के विरुद्ध निर्णायक कार्रवाई से जनता का विश्वास जीता। कांग्रेस पूरी तरह विफल रही। उसके प्रमुख चेहरे गौरव गोगोई को भी हार का सामना करना पड़ा। भाजपा की सफलता की कुंजी मजबूत गठबंधन रणनीति, घुसपैठियों के विरुद्ध सख्त दृष्टिकोण और विकास की ठोस उपलब्धियां रहीं। हिमंत सरकार ने असम को आत्मनिर्भर बनाने के लिए कई योजनाएं चलाईं, जिनमें स्थानीय युवाओं को रोजगार, कृषि आधुनिकीकरण और पर्यटन विकास शामिल हैं। घुसपैठ का मुद्दा सबसे संवेदनशील रहा। असम की जनता ने अनुभव किया कि केवल भाजपा ही उनकी सांस्कृतिक और जनसांख्यिकीय पहचान की रक्षा कर सकती है। कांग्रेस का संगठनात्मक बिखराव और कई प्रमुख नेताओं का दल छोड़ना भी उसकी हार का बड़ा कारण बना। कांग्रेस ने घुसपैठियों के वोट बैंक पर निर्भर रहने की गलती की, जिसे असम की जनता ने ठुकरा दिया। असमियों ने मतदान करते समय स्पष्ट संदेश दिया- असम

भाजपा की रणनीति, मजबूत गठबंधन, विकास का एजेंडा, राष्ट्रवाद और सांस्कृतिक गौरव- ने एक बार फिर सिद्ध कर दिया कि जनता उसी के साथ है जो भारत माता की सेवा करता है। हिमंत बिस्व सरमा जैसे नेताओं का उदय नई पीढ़ी के सशक्त राष्ट्रवादी नेतृत्व को दर्शाता है।

असम, पुडुचेरी और केरल के परिणाम केवल चुनावी जीत नहीं बल्कि भारत की बदलती राजनीतिक चेतना का प्रतिबिम्ब हैं। जनता विकास चाहती है, सुरक्षा चाहती है और अपनी सनातन संस्कृति की रक्षा चाहती है। वामपंथ, तुष्टिकरण और अलगाववाद की ताकतें लगातार कमजोर हो रही हैं।

भाजपा को इन जीतों को आगे बढ़ाते हुए पूरे देश में सकारात्मक बदलाव लाना होगा। 2026 के ये चुनाव इतिहास में दर्ज होंगे - राष्ट्रवाद की जीत, जिहादी ब्लैकमेल के अंत और सनातन भारत के जागरण के रूप में। असम की जनता ने दिखा दिया कि जब जनता एकजुट होकर अपनी रक्षा के लिए खड़ी होती है, तो कोई ताकत उसे हरा नहीं सकती। भारत आगे बढ़ रहा है- विकास की राह पर, राष्ट्रवाद की राह पर और सनातन धर्म की रक्षा की राह पर।

को बचाना है, घुसपैठियों को हटाना है और अपनी सांस्कृतिक विरासत की रक्षा करनी है। यह जीत विकास और राष्ट्रवाद के समन्वय का उत्कृष्ट उदाहरण है।

पुडुचेरीः राजग की सत्ता स्थाई

पुडुचेरी में भी राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) ने अपना प्रदर्शन दोहराया और सत्ता स्थाई रखी। भाजपा ने पूरे चुनाव अभियान के दौरान सहयोगी दलों के साथ संतुलन बनाए रखा, जिसका सीधा लाभ मिला। एनडीए का बेहतर चुनावी समन्वय और मजबूत रणनीति विपक्षी गठबंधन पर भारी पड़ी।

कांग्रेस नीत विपक्षी गठबंधन में आंतरिक गुटबाजी और नेतृत्व की अस्थिरता मुख्य समस्या रही। पुडुचेरी पहले से ही एनडीए की ओर झुका हुआ था। विकास परियोजनाओं, केंद्र सरकार की योजनाओं के प्रभावी क्रियान्वयन और स्थानीय मुद्दों पर भाजपा की पकड़ मजबूत रही। यह जीत दक्षिण भारत में भाजपा के विस्तार की दिशा में एक और मजबूत कदम है।

केरलः एलडीएफ की करारी हार और यूडीएफ का उभार

केरल में वाम मोर्चा (एलडीएफ) की लगातार दो कार्यकालों के बाद तीव्र एंटी-इन्कम्बेंसी ने उसे सत्ता से बाहर कर दिया। भ्रष्टाचार, परिवारवाद और विकास में सुस्ती के आरोपों ने वामपंथियों की जड़ें हिला दीं। कांग्रेस-नीत यूडीएफ ने बेहतर एकजुटता और रणनीतिक वोटिंग से लाभ उठाया।

केरल में मुस्लिम लीग का चुनाव लड़ना और कांग्रेस का समर्थन तय था, लेकिन वामपंथियों की हार ने सिद्ध कर दिया कि अब भारत में वामपंथ का कोई भविष्य नहीं बचा। यह चुनाव परिणाम पूरे देश के लिए संदेश है कि एंटी-इन्कम्बेंसी और बेहतर विकल्प के सामने पुरानी पड़ चुकी 'विचारधाराएं' टिक नहीं पातीं।

बंगालः जड़ों की ओर वापसी और राष्ट्रवाद की विजय

पश्चिम बंगाल में जनता अपनी जड़ों की ओर लौटी और राष्ट्रवाद को अपनाया। सीपीएम और तृणमूल कांग्रेस ने हिंसा को बंगाल की संस्कृति बना दिया था। जिहादी तत्वों के साथ 'दीदी' का गठजोड़ हिंदू समाज को तबाह करने का साधन बन गया था, लेकिन 2026 के परिणामों ने साफ कर दिया कि अब जिहादियों का नेगोशिएशन पॉइंट समाप्त हो गया है।

बिहार, उत्तर प्रदेश, असम के बाद बंगाल ने भी जता दिया कि जिहादी अब भारतीय राजनीति में ब्लैकमेल नहीं कर सकते। असम में इन तत्वों के एक्सपोज होने और उनके दबाव वाले वोटों से कांग्रेस को मिले लाभ को पूरे देश ने देख लिया। बंगाल को अगले एक साल हिंसा की तैयारी रखनी चाहिए क्योंकि हार गए तत्व शांत बैठने वाले नहीं हैं। फिर भी राष्ट्रवादी शक्तियों की बढ़ती पकड़ आशा की किरण है।

तमिलनाडुः चर्च की सक्रियता और नई चुनौती

तमिलनाडु में चुनौती का स्वरूप बदल गया। यहां चर्च की बढ़ती सक्रियता साफ दिखी। अभिनेता चंद्रशेखरन जोसफ विजय (थलाइवा विजय) सबसे सफल नेता सिद्ध हुए। अपनी विजय यात्रा में वे जीसस की तस्वीर लेकर निकले। राजनीतिक विश्लेषक अनुमान लगा रहे हैं कि जोसफ मुख्य मंत्री बनने पर वेटिकन से प्रेरित एजेंडे को आगे बढ़ा सकते हैं।

कांग्रेस ने एमके स्टालिन को छोड़कर तेजी से थलाइवा विजय के साथ हाथ मिलाया, जिससे उसके चर्च-प्रभावित होने पर संदेह और गहराया। आने वाले समय में यदि विजय को तमिलनाडु का केजरीवाल बनाने की रणनीति सफल हुई तो आश्चर्य नहीं होगा। दक्षिण भारत में ईसाई मिशनरी प्रभाव और क्षेत्रीय राजनीति की नई बारीकियां भाजपा के लिए चुनौती के साथ अवसर भी हैं।

राष्ट्रीय परिदृश्यः वामपंथ का अंत और सनातनियों का जागरण

2026 के इन चुनावों की सबसे बड़ी उपलब्धि यह है कि वामपंथ का भारत से समूल नाश हो गया। अब वे कहीं भी सत्ता में नहीं हैं। नक्सलियों की अंत की घोषणा भी केंद्र सरकार ने कर दी, जिसे किसी ने चुनौती नहीं दी। ***

'चरैवेति चरैवेति रा. स्व. संघ अंधेरी पूर्व वाटचाल' पुस्तक का विमोचन समारोह सम्पन्न

संघ के 100 वर्षों की सफल यात्रा प्रेरणादाई

- भैया जी जोशी

मुम्बई। समाज में अनेक प्रकार के प्रश्न रूपी समस्याएं एवं चुनौतियां तो रहेंगी ही, परंतु प्रत्येक प्रश्न को समझकर उसका उत्तर स्वयंसेवकों को देना चाहिए और वे दे भी रहे हैं। कोई भी क्षेत्र हो, कोई भी विषय हो, इसके समाधान हेतु स्वयंसेवकों की विराट शक्ति देश में उभरी है। डॉ. हेडगेवार जी की कल्पना का स्वयंसेवक सामर्थ्यवान व कौशल में निपुण होना चाहिए। संघ की 100 वर्षों की सफल यात्रा, संघ कार्य का विस्तार एवं प्रगति प्रेरणादाई और विश्वास देने वाली है, यह वक्तव्य भैया जी जोशी ने प्रमुख वक्ता के रूप में हिंदी विवेक मासिक पत्रिका द्वारा प्रकाशित 'चरैवेति चरैवेति रा. स्व. संघ अंधेरी पूर्व वाटचाल' पुस्तक के विमोचन समारोह के दौरान दिया।

इस दौरान मंच पर हिंदुस्थान प्रकाशन संस्था के अध्यक्ष पद्मश्री रमेश पतंगे, महानगर कार्यवाह सुरेश भगेरिया, सहार भाग संघचालक रवि नत्थानी, मोहन अय्यर, उद्योजक डॉ. अजित मराठे एवं हिंदी विवेक की कार्यकारी सम्पादक पल्लवी अनवेकर उपस्थित थे। भैया जी जोशी ने आगे कहा कि प्रतिकूल परिस्थिति में संघ कार्य प्रारम्भ हुआ तब लोग टिका टिप्पणी करते थे, परंतु जब नागपुर में संघ संचलन हुआ तब उसे देखकर वे हतप्रभ व आश्चर्यचकित थे। संघ का विरोध हुआ, संघ के मार्ग में रोड़े डाले गए, यहां तक कि संघ को समाप्त करने का प्रयास किया गया, परंतु संघ अपने लक्ष्य की ओर सफलतापूर्वक बढ़ता गया। संघ का एक गीत है- 'शत्रु पर भी मात करता आपका व्यवहार निर्मल' इस गीत को चरितार्थ करते हुए संघ स्वयंसेवक आगे बढ़ते जा रहे हैं। देश के लाखों गांवों में स्वयंसेवक 'नमस्ते सदा वत्सले मातृभूमे' संघ प्रार्थना करते हुए हिंदू के नाते एकत्रित होते हैं, जिसमें सभी समाज-जाति वर्ग के लोग शामिल हैं। आज इस्लाम, ईसाई, साम्यवादी के प्रमुख लोग भी संघ से भेंट करते हैं और विविध विषयों पर सलाह लेते हैं तथा विचार-विमर्श करते हैं। यह संघ पर बढ़ते विश्वास को दर्शाता है। इस सम्बंध में उन्होंने उदाहरण स्वरूप कुछ प्रसंग भी बताए।

भारत माता की प्रतिमा के समक्ष दीप प्रज्ज्वलन कर कार्यक्रम का शुभारम्भ किया गया। इसके बाद मंच पर उपस्थित मान्यवरों का परिचय और उनका स्वागत सम्मान किया गया। फिर उपरोक्त मान्यवरों के हाथों पुस्तक का विमोचन किया गया। हिंदी विवेक की कार्यकारी सम्पादक श्रीमती पल्लवी अनवेकर ने अपनी प्रस्तावना में हिंदी विवेक पत्रिका की 17 वर्षों की सफल यात्रा, नियमित अंक, विशेषांक, ग्रंथ, पुस्तक प्रकाशन की विशेषता और उपलब्धियों से सभी को परिचित करवाया। पद्मश्री रमेश पतंगे ने भी अपने उद्बोधन से सभा में उपस्थित सभी को भावविभोर कर दिया। इस कार्यक्रम में पराग अलवणी, विधायक मुरजी पटेल, सिने दिग्दर्शक राजदत्त जी, उद्योजक शिवकुमार खेतान, पूर्व पार्षद अभिजित सामंत, जनकल्याण बैंक के चेयरमैन संतोष केळकर सहित अनेक मान्यवरों के साथ बड़ी संख्या में संघ के स्वयंसेवक उपस्थित थे।

शैलेश घोसाळकर ने सभी के प्रति आभार जताया और श्रीकांत खंडकर ने कार्यक्रम का सफल संचालन किया। श्रीमती वृंदा केळकर ने सम्पूर्ण वंदेमातरम गाकर कार्यक्रम का समापन किया।

***

जनगणना •

पहली डिजिटल जनगणना की शुरुआत

भारत में वर्ष 2027 में होने वाली जनगणना पहली बार पूरी तरह डिजिटल तरीके से की जा रही है। ज्ञातव्य हो कि अब से पहले की जाने वाली जनगणना कागज पर होती थी, अब मोबाइल ऐप और ऑनलाइन पोर्टल से होगी।

स्निग्धा अवतंस

भारत में सूचना क्रांति का विस्फोट हुआ और डिजिटलीकरण भारत का सपना साकार हुआ तो भला देश की जनगणना डिजिटल तरीके से न हो, यह कैसे सम्भव है। जी हां, 2027 की भारत की जनगणना डिजिटल तरीके से की जा रही है। डिजिटल जनगणना 2027, विश्व का सबसे बड़ा जनगणना अभियान होगा, जिसमें डिजिटल तकनीकों का व्यापक उपयोग किया जाएगा। इसकी प्रमुख विशेषताओं में मोबाइल-आधारित डेटा संग्रह, जनगणना प्रबंधन और निगरानी प्रणाली के माध्यम से वास्तविक समय निगरानी, स्व-गणना की सुविधा, सटीक भौगोलिक मानचित्रण और जनसंख्या गणना के दौरान व्यापक जातिगत गणना शामिल हैं।

सरकार ने 16 जून 2025 को भारत के राजपत्र में जनगणना 2027 आयोजित करने की अधिसूचना जारी की और इसके लिए केंद्रीय मंत्रिमंडल ने 11,718.24 करोड़ के बजट को मंजूरी दी है। यह जनगणना तेज, सटीक और सुरक्षित डेटा उपलब्ध कराने के साथ-साथ जन-भागीदारी को बढ़ावा देगी, जिससे भविष्य की नीतियों और योजनाओं को और अधिक प्रभावी बनाया जा सकेगा। जनगणना दो चरणों में आयोजित की जाएगी।

हाउसलिस्टिंग और आवास गणना

अप्रैल से सितम्बर 2026 के बीच प्रत्येक राज्य/केंद्र शासित प्रदेश में लगभग 30 दिनों की अवधि में आयोजित होगी। इससे पहले 15 दिनों की स्व-गणना की सुविधा उपलब्ध रहेगी। इस चरण में मकानों की स्थिति, सुविधाएं और परिवारों की सम्पत्तियों से जुड़ी जानकारी एकत्र की जाएगी।

जनसंख्या गणना

यह फरवरी 2027 में आयोजित होगी, जिसमें प्रत्येक व्यक्ति से सम्बंधित जनसांख्यिकीय, सामाजिक-आर्थिक, सांस्कृतिक, प्रवासन और प्रजनन सम्बंधी जानकारी जुटाई जाएगी।

इसी चरण में जातिगत गणना भी की जाएगी। विशेष रूप से लद्दाख, जम्मू और कश्मीर, हिमाचल प्रदेश और उत्तराखंड के बर्फबारी वाले क्षेत्रों में यह चरण सितम्बर 2026 में आयोजित होगा। अधिकांश भारत के लिए 1 मार्च 2027 की मध्यरात्रि निर्धारित है, जबकि उपरोक्त बर्फबारी वाले क्षेत्रों के लिए 1 अक्टूबर 2026 की मध्यरात्रि तय की गई है। भारतीय जनगणना 2027 की एक प्रमुख विशेषता के रूप में जातिगत गणना उभर कर सामने आई है। उल्लेखनीय है कि वर्ष 2011 की जनगणना तक, इस प्रक्रिया में केवल अनुसूचित जातियों (एससी) और अनुसूचित जनजातियों (एसटी) की ही व्यवस्थित गणना की जाती थी। हालांकि 30 अप्रैल 2025 को राजनीतिक मामलों की कैबिनेट समिति (सीसीपीए) द्वारा लिए गए निर्णय के बाद अब जनगणना 2027 के अंतर्गत जातिगत गणना भी की जाएगी। जनगणना 2027 के लिए जनगणना प्रबंधन और निगरानी प्रणाली (सीएमएमएस) नामक एक समर्पित पोर्टल विकसित किया गया है। एकीकृत डैशबोर्ड के माध्यम से उप-मंडल, जिला, राज्य और

राष्ट्रीय स्तर के अधिकारी गणना की प्रगति, क्षेत्रीय कार्य-प्रदर्शन और परिचालन सम्बंधी तैयारियों की निगरानी कर सकेंगे।

हाउसलिस्टिंग और आवास जनगणना मोबाइल एप्लिकेशन

यह गणना करने वालों के लिए हाउसलिस्टिंग डेटा एकत्र करने और अपलोड करने हेतु एक सुरक्षित ऑफलाइन ऐप है, जिसका उपयोग केवल सीएमएमएस पोर्टल पर पंजीकृत व्यक्ति ही कर सकेंगे। यह ऐप सीधे फील्ड-से-सर्वर तक डेटा भेजने की सुविधा प्रदान करता है, जिससे कागजी कार्रवाई पूरी तरह समाप्त हो जाएगी। यह एंड्रॉइड और आईओएस प्लेटफॉर्म पर 16 क्षेत्रीय भाषाओं में उपलब्ध होगा।

हाउसलिस्टिंग ब्लॉक क्रिएटर वेब मैपिंग एप्लिकेशन

जनगणना 2027 का एक अन्य नवाचार एचएलबी क्रिएटर वेब मैपिंग एप्लिकेशन है, जिसका उपयोग चार्ज अधिकारियों द्वारा किया जाएगा। यह सैटेलाइट इमेजरी (उपग्रह चित्रों) की सहायता से हाउसलिस्टिंग ब्लॉक के डिजिटल निर्माण की सुविधा प्रदान करेगा, जिससे बिना किसी दोहराव या छूट के पूरे देश का सटीक भौगोलिक कवरेज सुनिश्चित हो सकेगा।

स्व-गणना पोर्टल

घर-घर जाकर की जाने वाली गणना से पहले 15 दिनों की एक वैकल्पिक स्व-गणना अवधि दी जाएगी। स्व-गणना पोर्टल एक सुरक्षित वेब-आधारित सुविधा है, जो किसी परिवार के पात्र उत्तरदाताओं को क्षेत्रीय कार्य (फील्ड ऑपरेशंस) शुरू होने से पहले अपने परिवार की जानकारी ऑनलाइन जमा करने की सुविधा देता है। सफलतापूर्वक डेटा जमा करने पर, एक विशिष्ट स्व-गणना पहचान संख्या (एसई आईडी) जनरेट होगी। इस एसई आडी को एंयूमेरेटर के साथ साझा करना होगा, जिसके आधार पर एंयूमेरेटर जानकारी की पुष्टि कर सकेंगे। डेटा संग्रहण से लेकर उसकी प्रोसेसिंग तक के प्रत्येक चरण में अत्याधुनिक तकनीक का लाभ उठाकर यह प्रयास किया जाएगा कि जनगणना के आंकड़े पूरे देश में न्यूनतम सम्भव समय में उपलब्ध कराए जा सकें। इसके अतिरिक्त जनगणना के परिणामों को अधिक अनुकूलित विजुअलाइजेशन टूल्स के माध्यम से प्रसारित करने के प्रयास भी किए जाएंगे।

***

राष्ट्रीय भावनाओं को जाग्रत करनेवाली सामाजिक व पारिवारिक पत्रिका

हिंदी विवेक
We Work For A Better World
मासिक पत्रिका

शुल्क ₹ 500

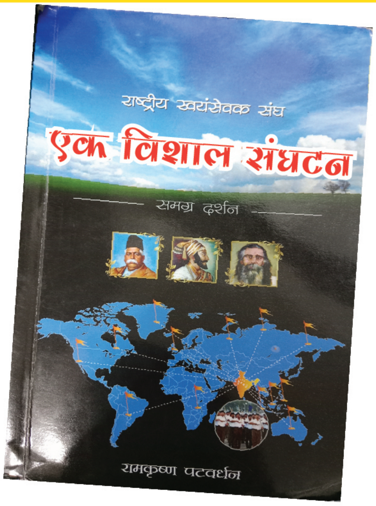

रा. स्व. संघ की स्थापना से लेकर शतकपूर्ति की यात्रा के विभिन्न पड़ावों तथा भविष्य के उद्देश्यों का सम्पूर्ण संकलन व आंकलन करने वाली पुस्तक

ऑनलाईन पंजीयन करने के बाद कृपया 9594991884 पर कॉल करके सूचित करें या व्हाट्सअप करें।

Draft or Cheque should be drawn in the name of : HINDUSTHAN PRAKASHAN SANSTHA-HINDI VIVEK

Bank : Bank of Maharashtra **Branch :** Prabhadevi

A/C No. : 60085108000 **IFSC :** MAHB0000318

UPI पेमेंट गेटवे के लिए QR कोड स्कॅन करे और मैसेज बॉक्स मे अपना नाम, पता व सम्पर्क नंबर दर्ज करें।

सम्पर्क - 9594991884 Email : hindivivekvargani@gmail.com

हेलीकॉप्टर से 'साल्वो' का परीक्षण

क्षमता •

डीआरडीओ और भारतीय नौसेना ने ओडिशा तट पर बंगाल की खाड़ी में स्वदेशी NASM-SR का पहला सफल 'साल्वो' (Salvo) परीक्षण किया है। एक हेलीकॉप्टर से 2 मिसाइलें एक के बाद एक (1.8 की गति से) दागकर, 55 किमी दूर शत्रु के जहाजों को सटीक निशाना बनाने की क्षमता का प्रदर्शन किया गया। विदित हो कि उक्त मिसाइल शत्रुओं के लिए घातक सिद्ध होगा। यह मिसाइल एक नौसैनिक हेलीकॉप्टर से दागा गया है।

रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन और भारतीय नौसेना ने ओडिशा तट पर बंगाल की खाड़ी में एक बड़े रक्षा परीक्षण को पूर्णरूप देते हुए नौसेना की लघु दूरी की जहाज-रोधी मिसाइल (NASM-SR) का पहला सैल्वो लॉन्च सफलतापूर्वक किया। इस परीक्षण में एक ही हेलीकॉप्टर से बेहद कम अंतराल में 2 मिसाइलें दागी गईं, जो इस उन्नत प्रणाली की सैल्वो क्षमता का पहला प्रदर्शन है।

परीक्षण के दौरान मिसाइलों ने न केवल लक्ष्य को भेदने में सटीकता दिखाई बल्कि जलरेखा के पास प्रहार करने की अपनी क्षमता भी प्रदर्शित की। चांदीपुर स्थित एकीकृत परीक्षण रेंज में तैनात रडार, इलेक्ट्रो-ऑप्टिकल सिस्टम और टेलीमेट्री उपकरणों से मिले डेटा के अनुसार सभी परीक्षण उद्देश्यों को पूरी तरह प्राप्त किया गया।

NASM-SR मिसाइल में सॉलिड प्रोपल्शन बूस्टर और लॉन्ग-बर्न सस्टेनर का प्रयोग किया गया है। इसमें अत्याधुनिक सीकर, फाइबर-ऑप्टिक जाइरोस्कोप आधारित इनर्टियल नेविगेशन सिस्टम, रेडियो-अल्टीमीटर, हाई-बैंडविड्थ टू-वे डेटा लिंक और जेट-वेन कंट्रोल जैसी तकनीकें शामिल हैं। इन सभी उप-प्रणालियों को डीआरडीओ और भारतीय उद्योगों ने स्वदेशी रूप से विकसित किया है।

इस मिसाइल प्रणाली को हैदराबाद स्थित रिसर्च सेंटर इमारत (आरसीआई) के नेतृत्व में विकसित किया गया, जिसमें डिफेंस रिसर्च एंड डेवलपमेंट लेबोरेटरी, हाई एनर्जी मैटेरियल्स रिसर्च लेबोरेटरी, टर्मिनल बैलिस्टिक्स रिसर्च लेबोरेटरी और खढठ चांदीपुर जैसी संस्थाओं का सहयोग रहा। वर्तमान में उत्पादन डीसीपीपी मॉडल के अंतर्गत भारतीय उद्योगों और स्टार्टअप्स के सहयोग से किया जा रहा है। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने इस उपलब्धि पर डीआरडीओ, नौसेना, वायु सेना और उद्योग जगत को बधाई देते हुए कहा कि इस मिसाइल के विकास से भारत की समुद्री रक्षा क्षमताएं और मजबूत होंगी। वहीं डीआरडीओ प्रमुख समीर वी. कामत ने भी सफल परीक्षण के लिए पूरी टीम की सराहना की। ***

भारत समुद्री रक्षा क्षमता में भी अपनी शक्ति आजमाने लगा है। समुद्र में भी वो शत्रुओं की शक्तियों को निष्क्रिय करने व उन्हें खदेड़ने की ताकत को बढ़ा देगा।

सूर्यकांत आयरे

सोमनाथ में ज्योतिर्लिंग स्थापना

सोमनाथ मंदिर केवल एक धार्मिक स्थल नहीं, बल्कि आस्था, संघर्ष और पुनर्जागरण का जीवंत प्रतीक है। सदियों तक आक्रमणों और विध्वंस का सामना करने के बावजूद यह मंदिर हर बार नए गौरव के साथ खड़ा हुआ।

सोनाली जाधव

इतिहास के पन्नों को पलट कर देखें तो सोमनाथ मंदिर को हमलावरों ने इसे कई बार तोड़ा। हर बार, यह पहले से भी अधिक गौरव के साथ फिर सिर उठाकर खड़ा हो गया। 11 मई, 1951 का प्रसंग भी ऐसा ही है। जूनागढ़ रियासत की प्रजा हिंदू थी, पर शासक महावत खां (तृतीय) स्वतंत्रता के बाद उसे पाकिस्तान में मिलाना चाहता था। इस पर गृह मंत्री सरदार पटेल और केंद्रीय मंत्री कन्हैयालाल माणिकलाल मुंशी ने वहां जनविद्रोह करा दिया। अतः वह अपनी बेगमों, कुत्तों और सम्पत्ति के साथ कराची भाग गया। इस प्रकार 9 नवम्बर, 1947 को जूनागढ़ भारत में मिल गया। चार दिन बाद 13 नवम्बर को सरदार पटेल और मुंशी जी वहां गए। उन्होंने सागर का जल हाथ में लेकर 'जय सोमनाथ' कहा और मंदिर के पुनर्निर्माण की घोषणा कर दी।

इसके बाद काम तेजी से आगे बढ़ने लगा। सरदार पटेल के सामने तो नेहरू जी चुप रहे, पर 15 दिसम्बर, 1950 को उनके देहांत के बाद वे विरोध पर उतर आए। गांधी जी की इच्छा थी कि इसमें सरकार का पैसा न लगे। अतः मंदिर निर्माण के लिए जामसाहब नवानगर दिग्विजय सिंह की अध्यक्षता में एक न्यास बना। जनता तथा धनपतियों ने दिल खोलकर दान दिया। न्यास की इच्छा थी कि ज्योतिर्लिंग की स्थापना राष्ट्रपति डॉ. राजेंद्र प्रसाद के हाथों से हो। इसके लिए श्री मुंशी ने उनसे भेंट की।

डॉ. राजेंद्र प्रसाद जानते थे कि नेहरू इसके विरोधी हैं, पर वे धर्मप्रेमी थे, अतः उन्होंने स्वीकृति दे दी। उन्होंने कहा कि चाहे इसके लिए उन्हें राष्ट्रपति का पद छोड़ना पड़े, पर वे पीछे नहीं हटेंगे क्योंकि वे सनातनी हिंदू पहले हैं राष्ट्रपति बाद में। उन्होंने प्रधान मंत्री को इसकी विधिवत सूचना भी दे दी। इस पर नेहरू जी बौखला गए। उन्होंने कहा कि सेक्यूलर देश होने के नाते राष्ट्रपति का इसमें शामिल होना ठीक नहीं है। इसके लिए उन्होंने पूर्व गवर्नर जनरल चक्रवर्ती राजगोपालाचारी से आग्रह किया कि वे राष्ट्रपति से कहें, पर राजगोपालाचारी ने हस्तक्षेप से मना कर दिया।

अब नेहरू के सामने कोई विकल्प नहीं था। अतः उन्होंने राष्ट्रपति से आग्रह किया कि वे इसमें व्यक्तिगत रूप से शामिल हों। यह डॉ. राजेंद्र प्रसाद की जीत और नेहरू की हार थी। इधर न्यास के अध्यक्ष ने सभी राज्य सरकारों से आग्रह किया कि वे स्थापना समारोह में पूजा के लिए अपने राज्य की पवित्र नदियों का जल, मिट्टी और कुशा घास भेजें। यह वैश्विक एकता का प्रतीक बने, इसके लिए यही आग्रह उन्होंने विदेशस्थ भारतीय राजदूतों से भी किया। इस पर नेहरू फिर भड़क गए। चीन में स्थित राजदूत सरदार के.एम. पणिक्कर चीन समर्थक और नेहरू के भक्त थे। उन्होंने सरकार से पूछा कि यह क्या हो रहा है तथा इसका खर्चा किस मद में डाला जाएगा, चीन की सरकार हमारे बारे में क्या सोचेगी? यद्यपि अधिकांश देशों ने सौजन्यपूर्वक यह सामग्री भेजी तथा इसका समाचार भी प्रकाशित किया। उस दौरान होने वाली मंत्रिमंडल की बैठकों में नेहरू प्रायः के.एम. मुंशी पर बरसते रहते थे।

एक बार नेहरू ने न्यास के अध्यक्ष और श्री मुंशी को धमकी भरा पत्र लिखा। मुंशी जी ने भी उसका मुंहतोड़ उत्तर दिया। न्यास के अध्यक्ष ने विचलित हुए बिना उन्हें भी समारोह में आने का निमंत्रण भेज दिया। नेहरू जी ने इसे पुनरुत्थानवादी कहकर ठुकरा दिया। इन परिस्थितियों में 11 मई, 1951 को राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद ने भव्य ज्योतिर्लिंग की स्थापना की। 'जय सोमनाथ' का संकल्प पूरा हुआ और जवाहर लाल नेहरू हाथ मलते रहे गए। ***

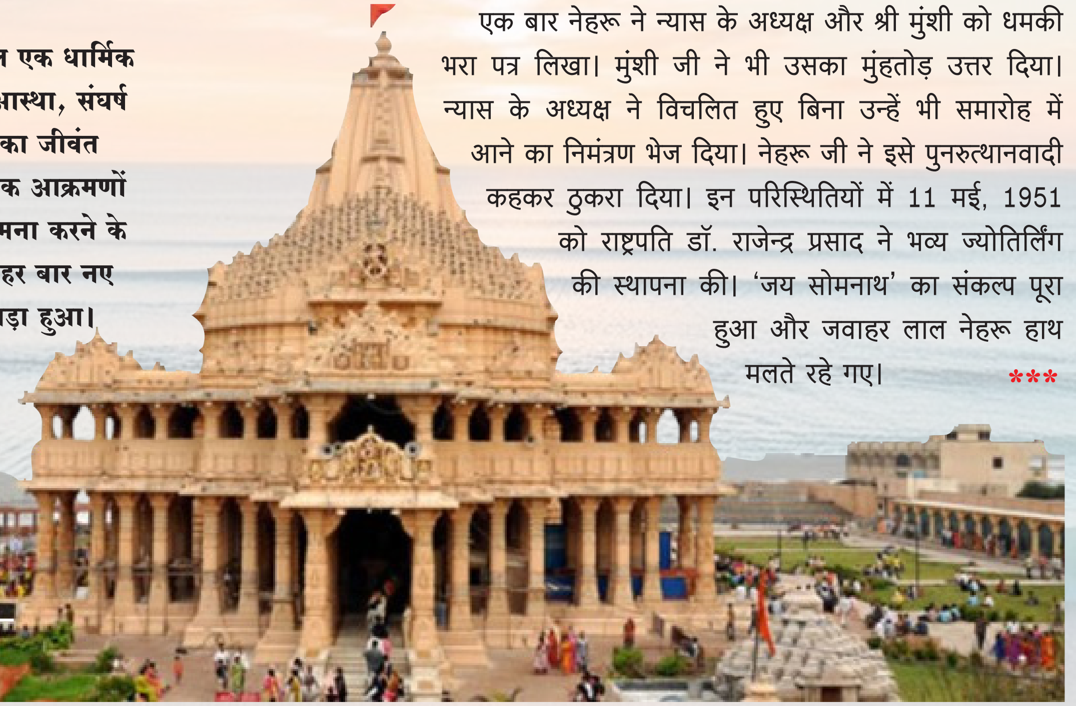

आपकी आवाज को बुलंद करने वाली
सम्पूर्ण पारिवारिक व सामाजिक मासिक पत्रिका

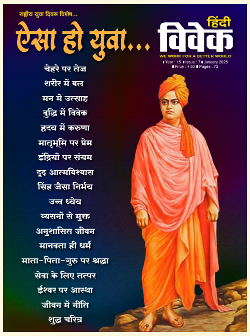

हिंदी
विवेक
" We Work For A Better World"

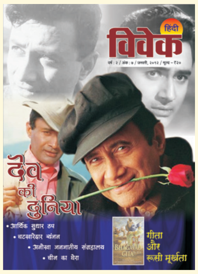

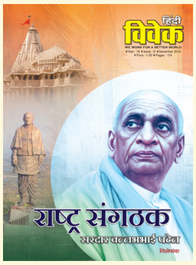

सदस्यता शुल्क

- वार्षिक मूल्य : रु. 500/-
- त्रैवार्षिक मूल्य : रु. 1,200/-
- पंचवार्षिक मूल्य : रु. 1,800/-
- संरक्षक मूल्य : रु. 25,000/-
- विदेशी सदस्यता शुल्क वार्षिक : रु. 5,000/-

खुद ग्राहक बनें व बनाएं

- जन्म दिन तथा अन्य समारोहों में हिंदी विवेक उपहार के रूप में भेंट करें।
- मित्रों, रिश्तेदारों तथा शुभचिंतकों को हिंदी विवेक की सदस्यता प्रदान करें।
- अपने दिवंगत स्नेहीजनों की स्मृति में 11, 21, 51 या 101 पाठकों को सदस्यता दें।
- विवाह के अवसर पर सदस्यता उपहार में दें।
- नववर्ष की शुभकामना के रूप में ग्रीटिंग कार्ड के स्थान पर हिंदी विवेक का सदस्यता रसीद प्रदान करें।

UPI पेमेंट गेटवे के लिए QR कोड स्कैन करें और मैसेज बॉक्स में अपना नाम, पता व सम्पर्क नम्बर दर्ज करें।

हिंदी विवेक कार्यालय

प्लॉट नम्बर 7, आरएससी रोड नम्बर 10, सेक्टर - 2, श्रीकृष्ण बिल्डिंग के पीछे,
हनुमान मंदिर बस स्टॉप के समीप, चारकोप, कांदिवली (पश्चिम), मुंबई - 400067

सम्पर्क : +91 95949 91884

hindivivekvargani@gmail.com / hindivivekadvt@gmail.com

हिंदी साहित्य के युग प्रवर्तक

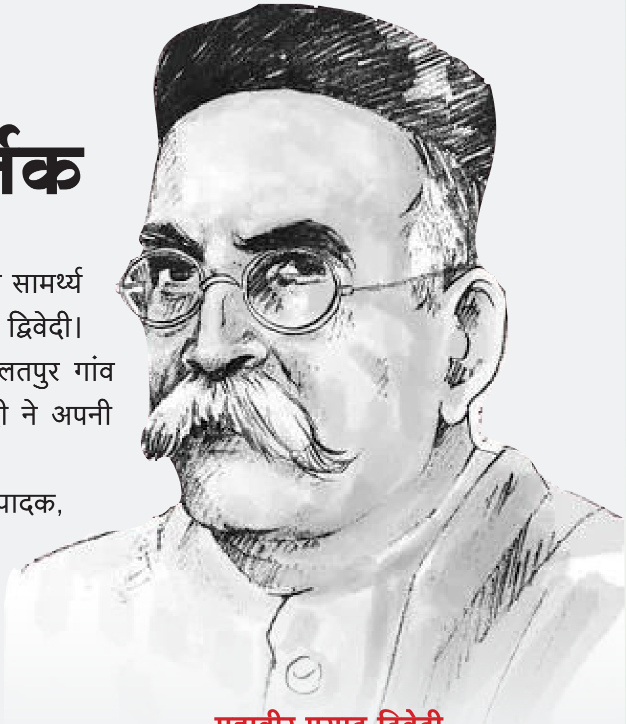
महावीर प्रसाद द्विवेदी

हिंदी साहित्य के इतिहास में कुछ नाम ऐसे हैं जो युग बदलने का सामर्थ्य रखते हैं। ऐसे ही एक महान स्तम्भ हैं- पंडित महावीर प्रसाद द्विवेदी। उनका जन्म 15 मई, 1864 को उत्तर प्रदेश के रायबरेली जिले के दौलतपुर गांव में हुआ था। उनका जन्मदिन हमें उस युग की याद दिलाता है जब हिंदी ने अपनी शैशवावस्था से निकलकर युवावस्था में प्रवेश किया।

महावीर प्रसाद द्विवेदी केवल एक कवि नहीं थे, वे एक विचारक, सम्पादक, साहित्यकार, पत्रकार और युगचेतना के प्रवर्तक थे। उन्होंने हिंदी साहित्य को एक नई दिशा दी और उसे सामाजिक सरोकारों से जोड़ा। उनके पहले हिंदी साहित्य में भक्तिकाल की पदावली, रीति-मुक्तक और कुछ घुमावदार शैली प्रचलित थी। द्विवेदी जी ने इसका स्वरूप बदला।

यदि द्विवेदी जी की सबसे बड़ी देन पूछी जाए, तो वह है 'सरस्वती' पत्रिका का सम्पादन। 1903 में जब उन्होंने इस पत्रिका का दायित्व सम्भाला, तो उसे देशभर में ख्याति मिली। उन्होंने सरस्वती को जन-जन की पत्रिका बना दिया। इसी पत्रिका के माध्यम से उन्होंने मैथिलीशरण गुप्त, माखनलाल चतुर्वेदी, रामनरेश त्रिपाठी, गया प्रसाद शुक्ल स्नेही, सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' और जयशंकर प्रसाद जैसे साहित्यकारों को राष्ट्रीय स्तर पर पहचान दिलाई। वे एक सफल पथप्रदर्शक थे, जिन्होंने साहित्य की नर्सरी को नई पौध से समृद्ध किया।

द्विवेदी जी की साहित्यिक साधना अत्यंत व्यापक थी। उन्होंने कविता, निबंध, आलोचना, इतिहास, विज्ञान और दर्शन पर रचनाएं कीं। उनकी प्रसिद्ध कृति 'साहित्य संगीत' काव्य संग्रह है, जिसकी कविताएं 'प्राणी को प्रेम अखिल रस मूला' जैसी पंक्तियां आज भी प्रासंगिक हैं। उनका निबंध संग्रह 'विचार-विमर्श' आज भी गम्भीर पाठकों के लिए उतना ही सार्थक है। वे हिंदी साहित्य के पहले आलोचकों में भी थे, जिन्होंने साहित्य के मूल्यांकन के सिद्धांत प्रतिपादित किए।

द्विवेदी जी में जो सबसे आकर्षक गुण था, वह था उनका सरल, संयत और अनुशासित व्यक्तित्व। वे मानते थे कि साहित्यकार राष्ट्र का सिपाही होता है। चाहे राष्ट्रीय आंदोलन का समर्थन हो, चाहे स्त्री-शिक्षा, विधवा-विवाह, अस्पृश्यता निवारण अथवा कुरीतियों का विरोध- उनकी कलम सदा प्रखर और स्पष्टवादी रही। उनकी भाषा में संस्कृतनिष्ठता है, पर वह कठोर नहीं बल्कि प्रवाहमयी और सौंदर्यपूर्ण है।

15 मई को उनका जन्मदिन हिंदी साहित्य प्रेमियों के लिए एक प्रेरणा दिवस है। आज जब हिंदी युवाओं से दूर होती जा रही है, जब हंसी-मजाक और सनसनीखेज सामग्री को ही साहित्य समझ लिया जाता है, तब द्विवेदी जी का आदर्श हमें याद दिलाता है कि साहित्य का मर्म केवल शब्द-चित्र नहीं बल्कि उसके पीछे की सोच और समाज के प्रति उत्तरदायित्व है।

द्विवेदी जी की सबसे बड़ी विशेषता थी कि वे कठिन विषयों को सरल भाषा में प्रस्तुत करना जानते थे। चाहे विज्ञान हो या दर्शन, उन्होंने हिंदी को हर क्षेत्र में सक्षम बनाया। यही कारण है कि आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने उन्हें 'हिंदी के गद्य पितामह' की संज्ञा दी। ***

वे चाहते थे कि साहित्य केवल मनोरंजन का साधन न हो बल्कि समाज सुधार, राष्ट्रभक्ति और जीवन के व्यावहारिक मूल्यों का प्रसारक हो। यही कारण है कि हिंदी में उनके नेतृत्व में जो युग आया, उसे 'द्विवेदी युग' (1900-1920) के नाम से जाना जाता है।

मुकेश गुप्ता

झालमुड़ी एक्सप्रेस

झालमुड़ी एक्सप्रेस का जलवा बंगाल में जीभ पर चढ़कर बोला। लोकतंत्र की कड़ाही में मुद्दे, घोषणाएं, वादे और भविष्य सब धीमी आंच पर पड़े हुए सड़े से रहे और 10 रुपए की झालमुड़ी एक्सप्रेस आई और अचानक सीटी बजा दी- हटो भाई, अब खेला हम करेंगे!

उन्होंने झालमुड़ी खाते हुए कहा कि देखिए, इससे तो मेरा बचपन से ही नाता है। बचपन में मां जब पड़ोस में बर्तन मांजती थी, बदले में मुरमुरे ले आती थी। उन्हीं से झालमुड़ी तैयार करके हमारा पेट भरती थी। आज वापस झालमुड़ी के दर्शन करके वह धन्य हो गए हैं। देर सही, लेकिन दुरुस्त रूप से अब सही नाश्ते पर आ गए हैं। साथ में उनके पार्टी कार्यकर्ताओं को भी झालमुड़ी की एक-एक मुट्ठी परोसी गई। पता नहीं झालमुड़ी नहीं पची या उनकी बातें, कि वे खट्टी डकारें लेने लगे। देखिए, किसी भी चीज को खाते समय अपने पुराने खाने को गलत कहना हमारी खानपान संस्कृति के अनुकूल है। आप जिस क्षण ठोंगा बदलते हैं, उसी क्षण पुरानी प्लेट आपके लिए अस्वास्थ्यकर घोषित हो जाती है। यह ठीक वैसा ही है जैसे दल बदलते ही पुरानी पार्टी राष्ट्रविरोधी और नई पार्टी राष्ट्रहितकारी हो जाती है।

झालमुड़ी खाना आसान है, पर झालमुड़ी पर वक्तव्य देना कठिन। यदि वे यह कह देते कि मैं अब तक गलत नाश्ता खा रहा था, तो कुछ डीसेंट लगता, पर समस्या यह होती कि जो नई झालमुड़ी है, वह पूछती- भाई साहब, आपका क्या भरोसा, कल हमें भी गलत सिद्ध कर देंगे? इस तरह हमें ठोंगे में क्यों भर रहे हैं? वो कह रहे हैं-देखो, हमने खाने से कभी मना नहीं किया। हम नेता हैं, सर्वहारा हैं, सब कुछ खा सकते हैं, पचा सकते हैं। फिर झालमुड़ी किस चीज का नाम है!

डॉ. मुकेश असीमित

वास्तव में बंगाल में इस बार चुनाव नहीं हुआ, नाश्तों का स्थानांतरण हुआ है। हरियाणा में जलेबी ने जो करिश्मा किया था, वही काम यहां झालमुड़ी ने कर दिया। जो काम बड़े-बड़े एजेंसियां, ईडी-सीबीआई के छापे नहीं कर पाए, जो काम इतिहास में दफन गड़े मुर्दे नहीं कर पाए, नेहरू की गलतियां नहीं कर पाईं, कैमरे के सामने रोने-धोने ने नहीं किया, शाम के 8 बजे के प्राइम टाइम के मित्रों भाइयों और बहिनों... ने नहीं किया- वह काम 10 रुपए के ठोंगे ने कर दिया। अब स्थिति यह है कि राजनीतिक पार्टियां नहीं, नाश्ते दल-बदल कर रहे हैं। मछली-भात से लोग ऊब गए तो झालमुड़ी में आ गए। कल को झालमुड़ी से मन भर गया तो कोई समोसा पार्टी जॉइन कर लेगा। यह एक जैविक प्रक्रिया है- जीभ-पेट को जो अच्छा लगे, वही विचारधारा बन जाती है। ओशो होते तो कादाचित् कह ही देते- भूख का दमन मत करो, वरना वह किसी दिन झालमुड़ी बनकर फूटेगी। पहले नेता चुपचाप खाते थे, किसी को भनक भी नहीं लगती थी। अब सम्मिलित रूप में खाते हैं, कैमरे के सामने खाते हैं, कैश में भुगतान भी करते हैं, ताकि कल कोई यह आरोप न लगा सके कि नेताजी 10 रुपए की झालमुड़ी फ्री में खा गए। कह रहे हैं आचार संहिता का उल्लंघन हुआ है- भाई, आचार का अचार डालेंगे क्या!

झालमुड़ी एक्सप्रेस चल पड़ी है। इसमें जनरल डिब्बे में जनता है, एसी कोच में एंकर हैं, पैंट्री कार में रणनीतिकार हैं और इंजन में 10 रुपए वाला ठोंगा। ट्रेन जहां-जहां रुकती है, वहां नारे लगते हैं- तुम मुझे वोट दो, मैं तुम्हें झालमुड़ी दूंगा। इससे जनता को कम से कम यह तो पता है कि भविष्य में उन्हें मिलेगा क्या। बाबाजी के ठेले की झालमुड़ी-सम्भावनाएं अनंत हैं।

ममता दीदी के लिए अब बेरोजगारी का संकट खड़ा हो गया है। सुझाव है कि वे तुरंत दीदी झालमुड़ी स्टार्टअप योजना शुरू करें। झालमुड़ी पर टैक्स माफ हो, स्कूलों में झालमुड़ी अध्ययन अनिवार्य हो, मछली-भात के स्थान पर सप्ताह में एक दिन राष्ट्रीय मुरमुरा दिवस मनाया जाए। सरकारी बैठकों में चाय-बिस्कुट की जगह झालमुड़ी परोसी जाए ताकि निर्णयों में भी थोड़ा चटपटापन आए। बंगाल में अब विकास का नया मॉडल बनेगा- सड़क कम बने तो चलेगा, पर हर मोड़ पर झालमुड़ी उपलब्ध होनी चाहिए। घोषणापत्र में लिखा जाएगा- हर हाथ ठोंगा, हर मुंह मसाला।

***

आप भी प्राकृतिक व मनोरम छटा को देखने में दिलचस्पी लेते हैं तो लोनार झील आपको बहुत पसंद आएगा। इस झील की विशेषता है कि जब-जब मौसम में बदलाव होता है तो इस झील के पानी का रंग भी बदलता है।

आपको घूमने का शौक है और आप रोमांचक स्थानों पर जाने में ज्यादा दिलचस्पी लेते हैं तो आप महाराष्ट्र राज्य में जाकर लोनार झील देख सकते हैं। यह झील आपको इसलिए पसंद आएगी कि मौसम बदलते ही उस झील के पानी का रंग भी बदल जाता है। जी हां, हम बात कर रहे हैं लोनार झील की।

महाराष्ट्र के बुलढाणा जिले में स्थित लोनार झील बहुत ही सुंदर है। इसकी मुख्य विशेषता यह है कि उल्कापिंड के प्रभाव से इसका निर्माण हुआ है। बताया जाता है कि लगभग 52,000 साल पहले एक उल्कापिंड के प्रभाव से इस झील का निर्माण हुआ था। वास्तव में जब एक बड़ा उल्कापिंड पृथ्वी से टकराया था, जिससे वहां एक विशाल क्रेटर बन गया था। जिसके बाद यहां पानी जमा हो गया और लोनार झील का निर्माण हुआ। इस झील का पानी अन्य झीलों की तुलना में काफी अलग है और पानी के दो अलग-अलग रंग दिखाई देते हैं। लोनार झील के पानी का रंग काफी मनमोहक है। साल के अलग-अलग समय में मौसम के आधार पर पानी का रंग बदलता है। यहां पानी का रंग कभी पन्ना हरा, तो कभी गुलाबी हो जाता है।

वैज्ञानिकों का कहना है कि पानी के रंग में बदलाव झील की सतह के नीचे पनपने वाले सूक्ष्मजीवों के कारण होता है। वैसे तो आप लोनार झील को किसी भी महीने में देखने जा सकते हैं, लेकिन यदि आप पानी का बदलता रंग देखना चाहते हैं, तो अक्टूबर से फरवरी सही समय माना गया है। इस दौरान मौसम सुखद होता है। बता दें इस झील के पास आप प्राचीन गोमुख मंदिर के दर्शन कर सकते हैं।

***

झील में बदलता पानी का रंग

एटीएम से निकलेंगे पीएफ के पैसे

अब आपको अपने पीएफ का पैसा निकालने के लिए पीएफ ऑफिस के कार्यालय का चक्कर नहीं लगाना पड़ेगा। जी हां! अब चुटकियों में ही एटीएम से आपके पीएफ के पैसों की निकासी की जा सकती है। ईपीएफओ 3.0 के आने से अपने पीएफ अकाउंट तक पहुंच पहले के मुकाबले काफी आसान होगी। इसकी एक सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसमें आप एटीएम और यूपीआई के जरिए अपने पीएफ का पैसा निकाल सकेंगे। यानी कि अब फंड निकालने के लिए आपको बैंक या ईपीएफओ ऑफिस के चक्कर नहीं काटने होंगे। ईपीएफओ 3.0 के अंतर्गत सब्सक्राइबर्स को एक पीएफ एटीएम कार्ड जारी किया जा सकता है। इसकी सहायता से आप किसी भी एटीएम में जाकर अपना पिन या ओटीपी डालकर कैश निकाल सकेंगे। इसी तरह से आप अपनी यूपीआई आईडी को भी पीएफ अकाउंट से लिंक कर पाएंगे। इसके बाद ईपीएफओ पोर्टल या उमंग ऐप के जरिए सीधे अपने बैंक अकाउंट में पैसा ट्रांसफर कर सकेंगे।

कैश विदड्रॉल की लिमिट

इसमें सदस्यों को एटीएम या यूपीआई का प्रयोग करके अपने कुल पीएफ बैलेंस का 50 से 75 प्रतिशत तक ही निकालने की अनुमति दी जा सकती है। यह पाबंदी इसलिए लगाई गई है कि ताकि सेविंग्स का कुछ हिस्सा भविष्य की आवश्यकताओं या आपातकालीन स्थितियों के लिए सुरक्षित रहे। विवाह के लिए आप 5 बार और शिक्षा के लिए 10 बार आंशिक निकासी कर सकते हैं। वहीं, नौकरी जाने के एक महीने बाद आप 75 प्रतिशत तक फंड निकाल सकते हैं। इसकी एक और विशेषता यह है कि इसमें बिना किसी मैनुअल जांच के ऑटो-सेटलमेंट की लिमिट 1 लाख से बढ़ाकर 5 लाख रुपए कर दी गई है।

***

जानें क्या है आरबीआई का मिशन सक्षम

आरबीआई शहरी सहकारी बैंकिंग क्षेत्र को और अधिक सुदृढ़ बनाने के उद्देश्य से 'मिशन सक्षम' योजना का शुभारम्भ किया है। यह पहल बैंकों की कार्यक्षमता, पारदर्शिता और स्थिरता को बढ़ाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम मानी जा रही है। क्या है यह योजना इस पर प्रकाश डालते हैं।

भारतीय रिजर्व बैंक ने शहरी सहकारी बैंकिंग क्षेत्र की क्षमता निर्माण के लिए मिशन सक्षम की शुरुआत की है। इसका उद्देश्य सभी शहरी सहकारी बैंकों में प्रबंधकीय और परिचालन क्षमताओं को बढ़ाना, अनुपालन संस्कृति में सुधार करना और संस्थागत लचीलेपन को मजबूत करना है। मिशन सक्षम शहरी सहकारी बैंकों के लिए एक मिशन-आधारित, क्षेत्रव्यापी और अखिल भारतीय क्षमता निर्माण प्रशिक्षण पहल है, जिसके अंतर्गत आरबीआई लगभग 1 करोड़ 40 लाख प्रतिभागियों को कवर करते हुए, प्रत्यक्ष और ई-लर्निंग पाठ्यक्रमों के माध्यम से बड़ी संख्या में प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करेगा। इन कार्यक्रमों का लक्ष्य बोर्ड सदस्यों, वरिष्ठ प्रबंधन, जोखिम प्रबंधन प्रमुखों आदि समूहों को शामिल करना है और जहां सम्भव हो, क्षेत्रीय भाषाओं में भी सामग्री उपलब्ध कराना है। मिशन सक्षम का उद्देश्य प्रणालीगत स्थिरता और यूसीबी क्षेत्र के स्वस्थ विकास के लिए एक स्थाई, स्व-संचालित पारिस्थितिकी तंत्र स्थापित करना है।

***

टाइम बम बनता एसी

गर्मियों से मुक्ति पाने के लिए लोगों के घरों में एसी चलना शुरू हो जाता है। जो तन को ठंडक तो देता है, लेकिन यही एसी कहीं टाइम बम न बन जाए, इसका ध्यान रखना आवश्यक है। गर्मियों में एसी धमाकों के कई मामले प्रकाश में आए हैं। विदित हो कि विगत दिवस, पूर्वी दिल्ली के विवेक विहार क्षेत्र में एक रिहायशी भवन में भीषण आग लगने से 9 लोगों की मौत हो गई। आग लगने का कारण एसी यूनिट में शॉर्ट सर्किट माना जा रहा है। विशेषज्ञों के अनुसार ये अचानक हादसे नहीं बल्कि लम्बे समय तक दबाव, खराब मेंटेनेंस और असुरक्षित वायरिंग का परिणाम हैं।

मॉडर्न एसी उच्च तापमान के लिए ही बने होते हैं, लेकिन लगातार चलाने और लापरवाही से ओवरहीटिंग, शॉर्ट सर्किट या धमाका हो सकता है।

एसी में धमाके होने के कई कारण हैं। जिनमें एसी का लगातार चलना और धूल भरी कॉइल से कम्प्रेसर गर्म होकर खराब होना शामिल है। कमजोर वायरिंग या घटिया एक्सटेंशन कॉर्ड गर्म होकर चिंगारी पैदा कर सकते हैं। एसी से जलने जैसी या मछली जैसी गंध आना, जो तारों के पिघलने का संकेत है। अजीब तरह की आवाजें आना, जैसे घिसने, फुफकारने या खड़खड़ाने की आवाज।

सर्किट ब्रेकर का बार-बार ट्रिप होना। एसी चालू होने पर लाइटों का धीमा पड़ जाना या टिमटिमाना।

दुर्घटनाओं से कैसे बचें

- एसी को लगातार न चलाएं।
- टाइमर लगाकर बीच-बीच में ब्रेक दें।
- ज्यादा प्रयोग के दौरान हर 10-15 दिन में फिल्टर अवश्य साफ करें।
- एक्सटेंशन बोर्ड का प्रयोग न करें।
- सुनिश्चित करें कि आउटडोर यूनिट के आसपास हवा का प्रवाह बना रहे और कोई रुकावट न हो।
- गैस लेवल और वायरिंग की जांच के लिए नियमित रूप से प्रोफेशनल से सर्विसिंग कराएं।

जिन क्षेत्रों में बार-बार बिजली ट्रिप होती है, वहां कम्प्रेसर की सुरक्षा के लिए वोल्टेज स्टेबलाइजर लगवाएं।

***

दही-चीनी की कटोरी में छुपा विज्ञान

कोई भी मौसम हो आप खाने के बाद दही-चीनी खाना पसंद करते हैं या फिर किसी शुभ काम के लिए जा रहे हों, परीक्षा देने जा रहे हों या फिर अन्य कोई काम हो तो दही-चीनी खाना शुभ और स्वस्थ्य परम्परा मानी जाती रही है। आपने कभी सोचा है कि खाने के बाद आपकी थाली में दही-चीनी क्यों परोसा जाता है या फिर दही-चीनी खाकर ही शुभ काम के लिए क्यों निकला जाता है? वास्तव में इसके पीछे वैज्ञानिक कारण भी हैं। दही में मौजूद प्रोबायोटिक्स (अच्छे बैक्टीरिया) पाचन तंत्र को सुधारते हैं और तनाव को कम करने में सहायता करते हैं, जबकि चीनी ग्लूकोज का त्वरित स्रोत है, जो मस्तिष्क को सतर्क बनाए रखता है। यह मिश्रण पेट को शांत और शरीर को ऊर्जावान बनाए रखता है। विदित हो कि चीनी में मौजूद ग्लूकोज सीधे मस्तिष्क और शरीर को ऊर्जा देता है, जो किसी भी परीक्षा या साक्षात्कार से पहले मानसिक सतर्कता बढ़ाने में सहायता करता है। यह कैल्शियम और प्रोटीन का एक अच्छा स्रोत है, जो शरीर को एक्टिव रखने में सहायता करता है।

***

किसानों को सम्मान देने का सार्थक प्रयास

जालना। जालना के उद्यमी अपनी कम्पनियों के माध्यम से संस्कृति को बढ़ावा दे रहे हैं। तरबूज के फसल उगाने वाले किसानों की सहायता करके उन्होंने समाज के सामने एक अनोखी पहल प्रस्तुत की है। इससे न केवल किसानों को सम्मान मिला है बल्कि समाज को एक सकारात्मक संदेश भी मिला है।

पिछले कुछ दिनों से व्यापारियों को तरबूज बहुत सस्ते दामों पर मिल रहे थे। किसानों से एक एकड़ तरबूज 1500 ते 2000 रुपए में खरीद रहे थे। यानी 10 टन तरबूज 2 हजार रुपए (20 पैसे प्रति तरबूज) में बिक रहे थे, जिससे किसान बहुत निराश थे। किसानों के सामने प्रश्न था कि इतनी मेहनत से उगाए तरबूजों का क्या करें?

ऐसे में जालना के कालिका, एसआरजे, पोलाद व वेद जैसी स्टील कम्पनियों ने किसानों से अच्छे दामों पर तरबूज खरीद कर अपने कर्मचारियों को मुफ्त में बांट दिया। तरबूजों की भारी फसल होने से उसकी कीमतों में रातोंरात उछाल आ गया। जिससे किसानों की उपज को अच्छी कीमत मिलने लगे। उक्त उद्यमियों ने जालना शहर की ग्रामीण विकास गतिविधियों के माध्यम से यह पहल की है। ग्रामविकास संयोजक विलास दहीभाते ने कहा कि व्यापारियों, उद्यमियों व उस क्षेत्र के समाज द्वारा किसानों को समर्थन दिया जाना चाहिए। उनकी समस्याओं को समझना और उन्हें प्राथमिकता देना आवश्यक है।

देवर्षि नारद पत्रकारिता सम्मान पुरस्कार 2026 की घोषणा

विश्व संवाद केंद्र (मुंबई) की ओर से दिए जाने वाले प्रतिष्ठित ‘देवर्षि नारद पत्रकारिता सम्मान 2026’ पुरस्कार की घोषणा विगत 30 अप्रैल को किया गया था। देवर्षि नारद पत्रकारिता सम्मान समिति के संयोजक डॉ. निशीथ क भांडारकर ने सम्मान प्राप्त करने वाले पत्रकारों के नामों की घोषणा की थी। जीवनगौरव पुरस्कार के लिए वरिष्ठ पत्रकार गणेश (भाऊ) तोरसेकर का चयन किया गया है।

पत्रकारिता के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए वरिष्ठ पत्रकार श्रेणी में मिलिंद बल्लाळ (ठाणे वैभव), जितेंद्र दीक्षित (एनडीटीवी), डॉ. मयूर परिख और राकेश त्रिवेदी (टाइम्स नाऊ नवभारत), युवा पत्रकार श्रेणी में मनश्री पाठक और सागर देवरे (मुंबई तरुण भारत) का चयन किया गया है। उत्कृष्ट रिर्पोटर के लिए गौरीशंकर घाळे (पुढारी) और उत्कृष्ट लेखन के लिए संजीव भागवत (सकाळ) को सम्मानित किया जाएगा। आकाश दांडेकर, माणिक रेगे (इंस्टाग्राम) और आकाश भावसार (यूट्यूब) को सोशल मीडिया में उनके उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए सम्मानित किया जाएगा। विदित हो कि ‘देवर्षि नारद पत्रकारिता सम्मान 2026’ समारोह का आयोजन आगामी 9 मई को नॅशनल स्टॉक एक्स्चेंज एम्फीथिएटर में आयोजित किया जाएगा। यह जानकारी डॉ. भांडारकर ने दी। उक्त समारोह में लेखक संदीप वासलेकर, ले.ज.(नि) आर.आर. निंभोरकर, प्रशांत पोळ सहित कई लेखक व वक्ता उपस्थित रहेंगे।

Pitambari Products Pvt. Ltd.: Maharashtra: 8291853804, North: 7011012599, South: 9886553105, East: 7752023380, 9867102999, CRM: 022 - 67035564/5699

www.pitambari.com
Toll Free: 18001031299
CIN: U52291MH1989PTC051314